Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 19 अंक 12 30 दिसम्बर, 2019 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

अब तो जागना होगा

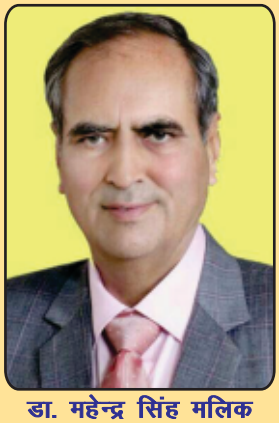

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

आज हम हर तरफ प्रदूषित वातावरण में जीने को मजबूर है। वैश्विक स्तर पर वायु प्रदूषण पर बात करें तो अकेले दूषित हवा के कारण भारत में एक साल में करीब 12 लाख मौत की आगोश में चले गए थे। स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर 2019 की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार, भारत में वायु प्रदूषण से मौत का आंकड़ा स्वास्थ्य संबंधी कारणों से होने वाली मौत को लेकर तीसरा सबसे खतरनाक कारण है। देश में सबसे ज्यादा मौतें सड़क हादसों और मलेरिया के कारण होती हैं। साल 2017 में भारत (12 लाख) और चीन (14 लाख) दोनों ही देशों में वायु प्रदूषण के कारण मौत का आंकड़ा 10 लाख को पार कर गया था। हालात किस कदर खतरनाक हो गए हैं इसका अंदाजा आप खुद ही लगा सकते हैं कि वायु प्रदूषण के बढ़ते खतरे के कारण दक्षिण एशियाई देशों के बच्चों की औसत उम्र में ढाई साल (30 महीने) की कमी आई है जबकि वैश्विक स्तर पर यह आंकड़ा 20 महीने का है।

यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो की एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट के अनुसार अगर धरती पर वायु प्रदूषण के स्तर पर सुधार आ जाए तो वैश्विक स्तर पर हर शख्स की उम्र में 2.6 साल का इजाफा हो जाएगा। भारत और चीन की बात करें तो वायु प्रदूषण से बेहाल चीन ने इस पर लगाम कसने के लिए कई बड़े फैसले लिए और धुआं निकालने वाले प्लांट और वाहनों के इस्तेमाल पर रोक लगाने संबंधी कई बड़े फैसले उठाते हुए कुछ हद तक सुधार किया लेकिन जीवन प्रत्याशा दर में अभी भी औसतन 3.9 साल की कमी है। अब भारत की बात करें, तो यहां पर राजधानी दिल्ली समेत कई शहरों में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर को भी पार कर गया है. भारत में जीवन–प्रत्याशा (लाइफ एक्सपेक्टेंसी) में 5.3 साल की कमी आई है. दिल्ली से सटे 2 शहरों (हापुड़ और बुलंदशहर) की बात करें तो यहां पर जीवन–प्रत्याशा की दर में निराशाजनक कमी आई है और यहां पर 12 साल से भी ज्यादा कम हो गई है जो दुनिया में किसी भी शहर की तुलना में सबसे ज्यादा है। भारत के पड़ोसी नेपाल में भी जीवन–प्रत्याशा की दर में कमी आई है और यहां पर लोगों की जिंदगी में 5.4 साल की कमी आई है। यहां पर उन जगहों की हालत ज्यादा खराब है जो भारत से सटे हैं। जबकि अमेरिका में 1970 से तुलना की जाए तो जीवन–प्रत्याशा की दर में 1 साल की कमी आई है। यूरोप में भी कमोबेश यही स्थिति है, यहां का पोलैंड सबसे प्रदूषित देश है जहां जीवन–प्रत्याशा की दर औसतन 2 साल की कमी आई है। स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, घर के भीतर या लंबे समय तक बाहरी वायु प्रदूषण से घिरे रहने की वजह से 2017 में स्ट्रोक, शुगर, हर्ट अटैक, फेफड़े के कैंसर या फेफड़े की पुरानी बीमारियों के कारण वैश्विक स्तर पर करीब 50 लाख लोगों की मौत हुई है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 30 लाख मौत तो सीधे तौर पर पीएम (पार्टिकल पलूशन) 2.5 से जुड़ी हैं। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल दुनिया के सबसे प्रदूषित क्षेत्र हैं। इन देशों में करीब 15 लाख लोगों की मौत वायु प्रदूषण के कारण हो गई। रिपोर्ट के अनुसार, दुनियाभर के करीब 3.6 अरब लोग घरों में रहते हुए वायु प्रदूषण के शिकार हो गए।

सल्फर ऑक्साइड (कोयले और तेल के जलने से), नाइट्रोजन ऑक्साइड, ओजोन, कार्बन मोनोक्साइड आदि कारणों से वायु प्रदूषण फैलता है। कृषि प्रक्रिया से उत्सर्जित अमोनिया इन दिनों सबसे ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाली गैस है। पहले नंबर पर अमोनिया (99.39), पार्टिकल पलूशन (पीएम 2.5) (77.86), वोलाइट ऑर्गेनिक कम्पाउंड्स (वीओसी) 54. 01 और नाइट्रोजन ऑक्साइड 49.41 स्तर पर प्रदूषण बढ़ा रहे हैं। ग्लोबल बर्डन ऑफ डिसीज के अनुसार, 2017 में प्रति 1 लाख की आबादी में वायु

शेष पेज–2 पर

शुभ सूचना

मैं जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला की ओर से आप सभी को नव वर्ष की शुभकामनाओ सहित परमपिता परमेश्वर से आपके मगंलमय व सुखद भविष्य की कामना करता हूं। इसके साथ ही आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा द्वारा 28 जनवरी 2020 (मंगलवार) को प्राप्त 11 बजे से 02 बजे तक दीन बंधु सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर 6, पंचकूला मे बंसतपंचमी के शुभ अवसर पर दीनबंधु सर छोटूराम की 139वीं जयन्ती के उपलक्ष्य मे एक भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है। समारोह के दौरान मेधावी छात्रो, उत्कृष्ठ खिलाडियों, सरकारी, अर्ध–सरकारी सेवाओं से सेवा–निवृत होने वाले जाट सभा के आजीवन सदस्यों आदि को नकद पुरष्कार व स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया जायेगा। जाट सभा के 80 वर्ष या इससे अधिक आयु के वरिष्ठ आजीवन सदस्यों को भी समारोह के दौरान सम्मानित किया जायेगा और ये आजीवन सदस्य अपना नाम व पूरा पता जाट भवन चंड़ीगढ़ कार्यालय में भेजने की कृपा करें। आप सभी से सादर निवेदन है कि समारोह मे परिवार सहित उपस्थित होकर उत्सव की शोभा बढ़ायें और इस भव्य समारोह के सफल आयोजन के लिये अपने सुझाव भी भेजने की कृपा करे।

इसके अलावा सभी बहनों एवं भाइयों से निवेदन है कि जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला/कटरा को स्वेच्छानुसार अनुदान देने की कृपा करे। आप द्वारा दी गई अनुदान राशि को समाज कल्याण के लिये प्रयोग किया जायेगा। जाट सभा को दी जाने वाली अनुदान राशि आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी (5) (vi) के तहत पत्रक्रमांक फा.सं. आ आ–2/चण्डी/तक/80जी/ 382/2013–14/01, दिनांक 04–04–2014 द्वारा जीवन पर्यन्त आयकर से मुक्त है।

डा. महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

शेष पेज–1

प्रदूषण के कारण सबसे ज्यादा मौत (65.85) के लिए प्रदूषण के 3 कारक ज्यादा जिम्मेदार रहे। सबसे ज्यादा मौत (38.15) आउटडोर प्रदूषण यानी चिमनी, वाहनों और आग से निकलने वाले धुएं से फैले प्रदूषण के कारण हुई। इसके बाद घर से निकलने वाले प्रदूषण (21.47) और ओजेन क्षरण (6.23) के कारण सबसे ज्यादा मौतें हुईं।

भारत की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है. प्रति 1 लाख पर 70.8 है जबकि जीडीपी 6,427 प्रति डॉलर है। मार्च में एयर विजुअल और ग्रीनपीस की रिपोर्ट के अनुसार, 2018 में दुनिया के 10 सबसे प्रदूषित शहरों में से 7 शहर भारत के हैं, जिसमें दिल्ली से सटे गुरुग्राम को सबसे प्रदूषित शहर के रूप में आंका गया। गुरुग्राम के अलावा 3 अन्य शहर और पाकिस्तान का फैसलाबाद शीर्ष 5 प्रदूषित शहरों में शामिल है. गुरुग्राम के बाद गाजियाबाद, फैसलाबाद (पाकिस्तान), फरीदाबाद, भिवानी, नोएडा, पटना, होटन (चीन), लखनऊ और लाहौर का नंबर आता है। इसी तरह शीर्ष 20 शहरों में 18 भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश से जुड़े हैं. अपनी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली को इस लिस्ट में 11वां स्थान मिला है. एयर विजुअल और ग्रीनपीस की यह रिपोर्ट पीएम 2.5 पर आधारित है। पीएम 2.5 वायुमंडलीय कण पदार्थ को संदर्भित करता है जिसमें 2.5 माइक्रोमीटर से कम व्यास का होता है, जो इंसानी बाल के व्यास का लगभग 3 फीसदी है। पीएम 2.5 का स्तर ज्यादा होने पर धुंध बढ़ जाता है और साफ दिखना भी कम हो जाता है। इन कणों का हवा में स्तर बढ़ने का बच्चों और बुजुर्गों पर बुरा असर पड़ता है।

दिल्ली के प्रदूषण पर आपने अखबारों में सुर्खियां तो पढ़ी ही होंगी जानी भी होंगी, चलो दिल्ली तो दूर है हरियाणा की ही बात कर लें। पिछले महीने ही हमने दिवाली मनाई थी। दिवाली के पांच दिन बाद हरियाणा में वायु प्रदूषण का स्तर बेहद खतरनाक स्थिति तक पहुंच गया था। प्रदेश के दस शहर तो गैस चैम्बर बने रहे। इन शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 500 रिकॉर्ड किया गया। प्रदेश में वायु प्रदूषण का यह स्तर इस वर्ष में अब तक का सर्वाधिक है। उधर, देश की राजधानी दिल्ली में स्वास्थ्य आपात काल लागू होने के बाद प्रदूषण फैलाने वालों पर हरियाणा में सख्ती बरती गई है लेकिन हरियाणा में इसके नाम पर महज खानापूर्ति ही होती रही। कागजों में तो हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में कई तरह की पाबंदियों के आदेश जारी किये हैं। इसके तहत फरीदाबाद और गुरुग्राम में पांच नवंबर तक निर्माण कार्यों पर रोक लगा दी गई। आदेश था कि इस दौरान रात में भी निर्माण कार्य नहीं होगा लेकिन मानता कौन है। वहीं, हरियाणा के एनसीआर जिलों में हॉट मिक्स प्लांट और स्टोन क्रेशर जरूर बंद रखे गए।

आप ये जानकार भी हैरान हो जाएंगे कि देश के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में 3 नवंबर को हिसार पहले स्थान पर रहा। यहां पूर्वाह्न 11 बजे एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआइ) 855 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर रहा, जो सर्वाधिक था। यदि औसत आंकड़े को देखा जाए तो हिसार में एक्यूआइ 495 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर रहा। दूसरे स्थान पर फतेहाबाद में 497 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर का प्रदूषण दर्ज किया गया। प्रदेश के दोनों ही शहरों में इस स्तर के प्रदूषण के कारण शहर में 60 मीटर तक की ही दृश्यता रही। दृश्यता कम होने के कारण पिछले 11 दिनों से हिसार से चंडीगढ़ जाने वाली फ्लाइट भी रद हैं। हरियाणा में दिल्ली से भी अधिक प्रदूषण का कारण पंजाब की तरफ से तीन किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से आ रही हवाएं हैं। दरअसल, पंजाब में 80 फीसद खेतों में फसल जलाई जा रही है। इसकी जानकारी फायर बर्निंग मॉनिटड्क्षरग सिस्टम के आंकड़े आने के बाद हो रही है। पंजाब के साथ लगते हरियाणा के कुछ हिस्सों में भी फसलों को जलाया जा रहा है लेकिन हरियाणा में इस बार आंकडे में बहुत सुधार देखा गया लेकिन मंजिल अभी बहुत दूर है। वायु प्रदूषण पर हाल ही में आई ग्रीन पीस की रिपोर्ट्स में एक बार फिर भारत के बड़े शहरों के हाल खस्ता नजर आए। गुरुग्राम दुनिया के सबसे ज्यादा प्रदूषित शहरों की लिस्ट में टॉप पोजीशन पर रहा।

जहां गुरुग्राम सबसे प्रदूषित शहर रहा तो, हमारी दिल्ली दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी के मामले में सबसे ऊपर रही। वाहनों पर ऑड और इवन प्रतिबंधः फ्रांस के शहर पेरिस में ज्यादा प्रदूषण के समय सरकार सार्वजानिक यानी पब्लिक ट्रांसपोर्ट में सफर करना फ्री करने के साथ–साथ शेयरिंग को बढ़ावा देती है। साथ ही, गाड़ियों और वाहनों में ऑड और इवन प्रतिबंध का इस्तेमाल किया जाता है। राजधानी दिल्ली में भी प्रदूषण ज्यादा होने पर आप सरकार ने यह प्रतिबंध लगाया था। इसके अलावा, दिल्ली में नई डीजल कार और 2000सीसी के इंजन के साथ वाली एसयूवी पर भी बैन लगा दिया। साथ ही, इलेक्ट्रिक, हाइड्रोजन और सीएनजी वाहनों के इस्तेमाल पर जोर दिया जा रहा है। जर्मनी के फ्रेइबर्ग में सस्ते पब्लिक ट्रांसपोर्ट के साथ करीब 500 किमी बाइक रूट बनाया गया है और वहां के कई शहरों में लोगों को अपने घर के आगे कार खड़ा करना मना है। वहां किसी भी कार मालिक को शहर में अपनी कार पार्क करने के लिए करीब 18 हजार यूरो देने पड़ते हैं। दिलचस्प बात तो ये है कि अगर वहां रहने के लिए आप बिना कार के साथ जाएंगे, तो आपको घर के साथ–साथ पब्लिक ट्रांसपोर्ट भी सस्ते में मिल जाएंगे। यह कदम वायु प्रदूषण को रोकने में बहुत ही लाभकारी हैं।

कंजेशन चार्ज, एक बेहतर उपायः डेनमार्क के कोपेनहेगन में कारों की जगह बाइक के इस्तेमाल को लेकर प्रोत्साहित किया जाता है। वहां पर लोगों के में भी व्यावहारिक बदलाव देखने को

मिलता है। यही वजह है कि वहां लोगों की संख्या से ज्यादा साइकिल मौजूद हैं। वहां ज्यादातर जगहों पर दशकों से गाड़ियों पर रोक है और साल 2025 तक वे कोपेनहेगन को कार्बन मुक्त बनाना चाहते हैं। कम दूरी के लिए साइकिल का प्रयोग करना सबसे बेहतर और बढ़िया उपाय है। जिसके प्रयोग को लेकर भारत को भी गंभीर कदम उठाने के बारे में सोचना चाहिए। इस कड़ी में, ओस्लो शहर द्वारा पार्किंग जगहों को खत्म करना और साथ ही मोटरिस्ट के ऊपर रश–फ्री चार्ज लगाने जैसे बेहतर और ठोस कदम उठाए गए हैं। लंदन समेत कई शहरों में कंजेशन चार्ज लगाया जाता है। गाड़ियों से निकलने वाले धुंए के बदले यह चार्ज वसूला जाता है। साथ ही लंदन में पुरानी कारों के इस्तेमाल पर भी चार्ज लगाया जाता है। यह कदम लोगों में व्यावहारिक परिवर्तन लाने में बड़े ही मददगार साबित होते हैं।

चीन का 'जायंट एयर प्योरिफायर' है एक बेहतर तरीकाः चीन ने एक प्रयोग के रूप में विश्व का सबसे ऊंचा प्योरिफायर एयर प्योरिफायर 'कियह' बनाया। यह करीब 330 फुट ऊंचा है। माना गया कि इसने 10 वर्ग किलोमीटर के दायरे में वायु की गुणवत्ता को स्वच्छ करने में मदद की। वहीं शोधकर्ता ने बताया कि प्योरिफायर लगने के बाद से टावर में एक करोड़ क्यूबिक मीटर ज्यादा स्वच्छ हवा मौजूद है। ये एयर प्योरिफायर दिन में बिना बिजली के काम करता है। इसका इस्तेमाल ग्रीन हाउसेस के जरिए होता है। पब्लिक ट्रांसपोर्ट और इलेक्ट्रॉनिक वाहनों का इस्तेमाल भी प्रदूषण को कम करता है। ब्राजील में भी 70 प्रतिशत शहरी जनता सार्वजनिक वाहनों का इस्तेमाल करती है।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी हर साल एक शब्द को साल का शब्द घोषित करती है। इस बार का वो शब्द है क्लाइमेट एमरजेंसी। इस साल वर्ड ऑफ द ईयर की रेस में कई ऐसे शब्द थे जो जलवायु परिवर्तन से जुड़े थे, इनमें क्लाइमेट इमरजेंसी के अलावा 'क्लाइमेट एक्शन', 'क्लाइमेट डिनायल', 'इको–एनेक्स्टी', 'एक्सनिक्शन' और फ्लाइट शेम शामिल रहे। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी की तरफ से हर साल एक नए शब्द को वर्ड ऑफ द ईयर चुना जाता है, जिसका उपयोग साल में सबसे ज्यादा बार हुआ हो और उसके सामाजिक मायने भी रहे हों। वर्ड ऑफ द ईयर का मकसद किसी एक शब्द जिसने पिछले साल के कार्यों, वैश्विक माहौल को उजागर किया हो और जिसमें ये क्षमता हो कि वह समाज में नई ऊर्जा लाने के लिए लायक है। पिछले कुछ वर्ड ऑफ द ईयर में टोक्जिक, यूथक्वेक, पोस्ट ट्रूथ और वेप जैसे शब्दों को चुना गया है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, अक्सर शब्दों को शॉर्टलिस्ट किए जाने में काफी तरह की वैराइटी देखी जाती है लेकिन इस बार सबसे ज्यादा विवाद और शब्दों का उजागर क्लाइमेट से जुड़े शब्दों का हुआ है।

आज आवश्यकता है कि हम सब को कुछ करना होगा, आइए पेड लगाएं, अपने घर और पड़ोस को साफ सुधरा रखें, कच्चरा ना फेंके, खुले में शौचालय जाना बन्द करें। औद्योगिक और यातायात प्रदूषण पर नियंत्रण हेतु तुरन्त करगार कदम उठाने की आवश्यकता है। कैलीफोरनिया (यू.एस.ए.), नार्वे, डैनमार्क आदि देशों की तर्ज पर वाणिज्य वाहन के तौर पर इस्तेमाल किये जा रहे हाईड्रोजन फ्यूल सैल वाहन यातायात प्रदूषण को काफी हद तक कम कर सकते है।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

Lata Mangeshkar- The Legend of the 20th Century

- R. N. Malik

I was greatly overjoyed and relieved when Lata Ji, the melody Queen or the Nightingale of India was discharged from the hospital last week. Lata Ji is blessed with a highly melodious voice and sang thousands of captivating songs (Sadabahar Nagme) ever since her debut song in film Mahal in1949.That song Ayega aanewala created ripples throughout the country and made her a celebrity overnight. She never looked back till she rendered her last song in 2004 in Veer Zara. The haunting songs of the golden era (1950-1970) have not lost their freshness, effervescence and fragrance even by a whimper. As a result, Lata Ji continues to rule our hearts till now. No other icon (except Rafi Sahib) in India has garnered so much love, respect, and admiration form the people as Lata ji has done. It appears as if all the planets in her horoscope are positioned in the most propitious positions.

Lata Ji was prima dona among her contemporary female singers like Asha Bhonsle, Usha Mangeskar (both real sisters), Geeta Dutt and Suman Kalyanpur. Usha Mangeskar's voice almost resembled that of Lata Ji. You cannot distinguish the voices of the two sisters in the enchanting duet Tumko piya dil diya bare naz se in the film Shikari Why Usha could not sing many songs is still a mystery. Suman Kalyanpur also had a melodious voice but lacked versatility.

Asha Bhonsle excelled Lata Ji in a couple of songs and duets like Rat rat bhar jag jag kar intzar karte hain in Pyar ka Sagar and O haseena julfon wali jane kahan of

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। –स्वामी विवेकानंद

Teesari Manjil. The extent to which she could stretch her vocal chords in this song was simply unbelievable.Her shrill voice mostly fitted in the lilting music of O. P. Nayyar and R. D. Burman. The Lata song Na Jano Sajan in Baharon ke Sapne in a hushed voice could be sung with greater aplomb by Asha Bhonsle because of her shrill voice. Geeta Dutt excelled every singer in two memorable songs I. e. Waqt ne kiya kya haseen sitam in Kagaz ke Phool and Na jao sanyan chhuda ke bayan in Sahib Bibi aur Gulam.

Her voice suited more in the low pitch music of S. D. Burman, Hemant Kumar or N. Dutta. Unfortunately like Guru Dutt, she died at the young age of 42. On the contrary, voice of Lata Ji like Rafi Sahib was full of versatility.It had variations, modulations ,finnese and nuances in full measure. She could exactly sing in the voice of a child in birth day songs of child artists. That is why she bagged 60 percent songs in Bollywood films. Every ardent music lover has prepared his own list of best songs sung by Lata Ji .I too have a list of 100 songs and five most haunting melodies are as follow.

1. Jis dil mein basa tha pyar tera(Saheli).
2. Mujhko is raat ki tanhai mein awaz na do (Dil bhi tera ham bhi tere)
3. Tera mera pyar amar(Asli Naqli)
4. Rang dil ki dhadkan lati to hogi(Patang)
5. Na to dard gaya na dawa hi mili(Kali topi lal roomal

But the song that brought out best in Lata Ji and tears in the eyes of Jawaharlal Nehru was a non filmy one . The song is Ai mere watan ke logo jara ankh mein bharlo pani, jo shaheed hue hain unki jara yaad karo kurbani.It was written by Kavi Pardeep and tuned by C. Ramchandra.

Persons like Lata Ji or Rafi Sahib are born once in centuries. Rafi Sahib is gone but Lata ji still with us. Let us all wish her a very long and healthy life.

स्वतंत्रता संघर्ष का स्वर्णिम अध्यायः भारत छोड़ो आंदोलन 'करो या मरो' का महामंत्र रंग लाया

– डॉ. ज्ञान प्रकाश पिलानिया, पूर्व सांसद, जयपुर

प्रोफेसर बिपिन चन्द्र के अनुसार 'भारत छोड़ो आंदोलन (अगस्त–क्रांति)' भारतीय जनता की वीरता और लड़ाकूपन की अद्वितीय मिसाल है। उसका दमन भी उतनी ही पाशविक और अभूतपूर्व था। मार्च–अप्रैल 1942 में, ब्रिटिश सरकार के केबिनेट मंत्री स्टैफोर्ड क्रिप्स के मिशन की विफलता से, भारतीय जनता की निराशा और क्षोभ की सीमा न रही। क्रिप्स मिशन ने, पूर्ण स्वाधीनता के स्थान पर 'डोमिनियन राज्य' का विकल्प सुझाया था। इस 'लौलीपोप' को कांग्रेस ने स्वीकार नहीं किया। उस समय युद्ध में, दक्षिण–पूर्व एशिया से ब्रिटेन पीछे हट रहा था, सिंगापुर और रंगून पर जापान का कब्जा हो गया था। कलकत्ता पर बम गिराए जाने लगे थे, मलाया और बर्मा को अंग्रेजों ने खाली कर दिया था। परिणामस्वरूप, ब्रिटिश शासन में, जनसाधारण की आस्था डगमगाने लगी थी। अनाज की जमाखोरी से, जनता भूखों, मरने लगी थी। गांधीजी को लगने लगा था कि संघर्ष है और देर करना उचित नहीं। उनके प्रस्ताव, 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' पर, कांग्रेस कार्यसमिति ने 14 जुलाई 1942 को वर्धा में संघर्ष के निर्णय को स्वीकृति दे दी। अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में अगस्त में इस प्रस्ताव का अनुमोदन होना था। तिलक निवाण–दिवस (1 अगस्त) पर जवाहरलाल नेहरू ने घोषणा की, 'संघर्ष निरन्तर संघर्ष! मेरा यही उत्तर है एमरी–क्रिप्स को।'

8 अगस्त 1942 को एक एतिहासिक सभा बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में हुई। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 'करो या मरो,' का नारा देते हुए उद्‌बोधन किया, 'एक मंत्र है, छोटा–सा मंत्र है, जो मैं आपको देता हूँ। उसे आप अपने हृदय में अंकित कर सकते हैं और अपनी सांस–सांस द्वारा वक्त कर सकते हैं। वह मंत्र है, 'करो या मरो' या तो हम भारत को आजाद कराएंगे या इस कोशिश में जान देंगे। अपनी गुलामी का स्थायित्व देखने के लिए, हम जिंदा नहीं रहेगे।' भाषण में सबसे पहले उन्होंने स्पष्ट किया कि 'असली संघर्ष इसी क्षण में शुरू नहीं हो रहा है। आपने सिर्फ अपना फैसला करने का संपूर्ण अधिकार मुझे सौंपा है। अब मैं वायसयराय से मिलूंगा और उनसे कहूंगा कि वे कांग्रेस का प्रस्ताव स्वीकार कर लें।इसमें दो या तीन हते लग जायेंगे। इतना आप निश्चित जान लें कि मैं आजादी से कम किसी भी चीज से संतुष्ट होने वाला नहीं।' सभा में उमड़ते जन समुद्र पर गांधी जी के भाषण का बिजली जैसा असर हुआ। जनता का उत्साह हिलोंरे लेने लगा, जय–जयकार होने लगी। भाषण में, विभिन्न वर्गों को स्पष्ट निर्देश दिये गये थे। छात्र पढ़ाई छोड़ें। किसान कर न दें, मालगुजारी न दें। सैनिक, अपने देशविासयों पर गोली चलाने से इंकार कर दें। राजा–महाराजा, भारतीय जनता की प्रभुसत्ता स्वीकार करें। जमींदारी प्रथा खत्म हो। गांधे की हरावल में जन समुदाय भी हर कुर्बानी करने को आतुर था।

इससे पहले कि अखिल भारतीय कांग्रेस समिति 'भारत छोड़ों' प्रस्ताव, ओपचारीक रूप से पारित करें, गिरफतारी और दमन के आदेश रातों–रात जारी हो गये। वायसराय लिनलिथगो

ने गांधीजी के भाषण को 'युद्ध घोषणा' माना। अगस्त के सूर्योदय से पहले ही बापू सहित कांगेस के सभी बड़े नेताओं को गिरतार करके अज्ञात स्थानों पर भेज दिया गया। युद्ध की आड़ लेकर, सरकार ने अपने को सख्त–से–सख्त कानूनों से लैस कर लिया था, जिनका इस आंदोलन के कुचलने के लिए बेरहमी से प्रयोग किया गया। सरकार के इस अनपेक्षित हमले से देशभर में तूफान–सा आ गया। ग्वालिया टैंक में पूनः आयोजित सभा में लाखों लोग उमड़ पड़े। आसफ अली ने तिरंगा फहराया और जमींदोज हो गई। नेताओं की जगह, जाबांज उत्साही युवकों, मजदूरों, किसानों और विद्यार्थियों ने ले ली। जनता ने खुलेआम विद्रोह कर दिया। गांवों में, शहरों में, कारखानों में, फैक्ट्रियों में, स्कूलों में, समाज के हर तबके में, स्वयंस्फूर्त नेतृत्व उभर आया। प्रांतीय तथा स्थानीय स्तर के नेता, जो गिरफतार होने से बच गये थे, अपने–अपने इलाकों में जाकर, प्रतिरोधात्मक गतिविधियों का संचालन करने लगे। बाद में, आंदोलन की बागडोर, अच्युत पटवर्धन, अरुणा आसफ अली, राममनोहर लोहिया, सुचेता कृपलानी, छोटूभाई पुराणिक, बीजू पटनायक आर.पी. गोयनका, जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने संभाल ली। उषा मेहता और लोहिया बम्बई शहर से 'कांग्रेस रेडियो' का गुप्त संचालन करते रहे। 9 अगस्त को, बम्बई में हड़ताल रही, पूना और अहमदाबाद में भी यही हुआ। सरकार से जनता का टकराव हुआ 10 अगस्त को दिल्ली, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना आदि शहरों में हड़ताल रही तथा बड़े–बड़े जुलूस निकले। सरकार ने प्रेस का गला घोंट दिया। बहुत–से अखबार, कुछ समय के लिए बंद रहे। 'नेशनल हेराल्ड' और 'हरिजन' पर ताला लग गया। परन्तु, सैकड़ों गैर–कानूनी पत्रिकाएं भी देश भर में निकलती रहीं। अहमदाबाद के कारखाने साढ़े तीन महीने तक बंद रहे, बम्बई में एक सप्ताह और जमशेदपुर में 13 दिन बंद रहा। मजदूरों ने आंदोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

काशी विश्वविद्यालय के छात्रों ने गांवों में अलख जगाई। उनके नारे थे– थाना जलाओ, स्टेशन फूंक दो, कचहरियों पर आक्रमण करो, पुल उड़ाओ, टेलीफोन–तार लाइनें काट दी। देहात में भी जैसे ही खबर पहुंचने लगी, तो वहां भी विद्रोह का सिलसिल चल पड़ा, आग फैलती गई। जगह–जगह विशाल भीड़ ने सरकारी सत्ता के प्रतीकों पर आक्रमण किया, रेल पटरियां उखाड़ दीं, सार्वजनिक भवनों पर तिरंगा फहराया, तहसीलों–जिला मुख्यालयों पर, सत्याग्रहियों ने गिरतारी भी दी। स्कूलों–कॉलेजों में हड़ताल हो गई। छात्रों ने जुलूस निकाले, गैर कानून परचे बांटे। रेलगाड़ियों पर राष्ट्रीय ध्वज भी फहराया गया। विहार और यू.पी. में तो विद्रोह जैसा माहौल बन गया था। देश के कुछ हिस्सों में समान्तर सरकारों की स्थापना हुई। पहली ऐसी सरकार, बलिया में, चित्तू पांडे के नेतृत्व में बनी, जिसका पूर्ण प्रभुत्व एक सप्ताह तक चला। बंगाल के मिदनापुर जिले तामलुक में 17 दिसंबर 1942 को 'जातीय सरकार' का गठन हुआ, जिसका अस्तित्व सितम्बर 1944 तक रहा। महाराष्ट्र के सतार में 'प्रति सरकार' बनी, जिसके प्रमुख नेता वाई.बी. च्वहाण थे और यह 1945 कायम रही। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 9 से 16 अगस्त तक, 250 रेलवे स्टेशन, 500 डाकघर, 150 थानों पर हमले कर क्षति पहुंचाई गई। टेलीफोन तारों के कटने की हजारों घटनाएं हुई। इस प्रकार जनता का यह खुला विद्रोह था।

9 अगस्त 1942, गांधीजी के 'करो यो मरो' के ऐतिहासिक नारे के दिन देशभर में चेतना जो प्रवाह बना, वैसा कभी देखने में नहीं आया। देश के हर कोने में बाल, युवा व वृद्ध कर गुजरने और मरने की तैयारी लेकर उठ खड़े हुए। हर कोई नेता बनकर स्वंय सवाल कर रहा था और उत्तर भी स्वयं खोज रहा था। पहला अवसर था जब आंदोलन की अगुवाई के लिए किसी नेता बड़े आदमी की जरूरत नहीं थी। लाठी–गोली खाने और स्वयं को मिटा देने का संक्लप लेकर लाखों लोग सड़कों पर आ गए थे। एक साथ, ही समय में 'अंग्रेंजों भारत छोड़ों' का नारा गूंज उठा। हिमाचल से कन्याकुमारी तक तिरंगा झंडा आन–बान और शान बन गया। 'वन्दे मातरम्' अभिवादन हो गया। 1942 की 9 अगस्त का पहली बार देश में समलक्ष्य बना। सारे देश में आजादी की तड़प इतनी तीव्र बन गई कि सब कोई एक साथ खड़े हो गए। छोटे बच्चों के स्कूलों का बहिष्कार करना, 'इंकलाब जिन्दाबाद, वन्दे मातरम' के साथ गांधीजी की जय, अंग्रेजों भारत छोड़ों के नारे लगाते हुए सड़कों पर आ जाना, लाठी और गोली के लिए तैयार रहना, यह बहुत बड़ी घटना थी।

अंग्रजी सरकार द्वारा जनता पर जुल्म का कहर ढहाया गया, हवाई जहाज से मीशनगनें भी चलाई गईं, कोड़ों से पीटा गया, गांवों में आग लगाई गई, सामुहिक जुर्माना (कुल 90 लाख रुपये) वसूल किया गया। 1942 के अंत तक 60 हजार लोगों को गिरतार किया गया, 26 हजार लोगों को सजा दी गई और 18 हजार नागरिकों को भारत रक्षा नियमों के तहद कैद रखा गया। फायरिंग में कितने मरे, इसकी गिनती नहीं की। सरकार दमन और जुल्म से आहत होकर, 10 फरवरी 1943 को पूना के आगा खां पैलेस में नजरबंद गांधीजी ने 21 दिन का उपवास शुरु कर दिया। उपवास की खबर, जंगल में आग की तरह फैल गई। देशभर में हड़तालों, प्रदर्शनों और जनसभाओं का तांतालग गया। सामूहिक उपवास हुए। लेकिन, ब्रिटिश प्रधानमंत्री विन्स्टन चर्चिल ने एक शर्मनाक बयान दिया, ''हम एक कमबख्त बुड्ढे के सामने कैसे झुक सकते हैं, जो हमेशा हमारा दुश्मन रहा है।'' वायसराय लार्ड वैवल ने वही लज्जाजनक राग अलापा और महात्मा के मौत का इंतजार करते हुए कहा,

जो अपना चित्र मुझमें लगा देते हैं, वे मेरी कृपा से संसार के सभी दुःखों से पार हो जाते हैं। –श्री कृष्ण

''गांधी के न रहने पर, जो वर्षों से समझौता न होने देने के लिए हर कोशिश करता रहता है, समझौते की संभावना काफी बढ़ जायेगी।'' एक ओर तो पूरा देश गांधीजी की जान बचाने के लिए प्रार्थना कर रहा था और दूसरी ओर सरकार अंतिम संस्कार की तैयारी में जोर–शोर से मशगूल थी। सरकारी कार्यालयों में आधे दिन की छुट्टी घोषित करने की भी योजना बन गई थी। परन्तु, सरकार की बद–मुराद पूरी नहीं हुई। गांधीजी ने, हमेशा की तरह, अदम्य संजीवनी शक्ति का परिचय देते हुए, सरकार को मात दे दी और मरने से हंकर कर सरकारी इरादों पर पानी फेर दिया। गांधीजी के उपवास का उद्देश्य पूरा हुआ– जनसाधारण में अनोखे आत्मबल का संचार हुआ। सारी दुनिया के सामने सरकारी दमन का पर्दाफाश हुआ और विदेशी सरकार के मुंह पर कालिख पुत गई। आखिर, सरकार को झक मार कर, बीमारी के आधार पर गांधी को 6 मई 1944 को रिहा करना पड़ा।

1942 के 'भारत छोड़ो' ऐतिहासिक आदोन की सबसे बड़ी खूबी यह रही कि इसके द्वारा आजादी की मांग, राष्ट्रीय आंदोन की पहली मांग बन गई। अब पीछे कदम नहीं हटाया जा सकता था। इस आंदोलन का एक महत्पूर्ण पक्ष था, देश की आजादी के जंग में आम जनता की हिस्सेदारी तथा समर्थन। देशभर के युवा एवं किसान इस आंदोलन की जान थे। वास्तव में कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को, आंदोलन की स्पष्ट रूप रेखा तय करने या आंदोलन की अगुवाई करने का अवसर ही नहीं मिला। इसी आशंका से, 8 अगस्त 1942 को, अखिल भारतीय कांगेस द्वारा पारित प्रस्ताव में स्पष्ट कहा गया था, 'जब निर्देश जारी करना संभव न हो सके या निर्देश लोगों तक पहुंच ही न सके या कोई कांग्रेस समिति कार्य न कर सके। अगर ऐसा होता है, तो 'प्रत्येक पुरुष और स्त्री को, जो इस आंदोलन में भाग ले रहा है.. अपने काम का खुद ही फैसला करना होगा। हर भारतीय को, जो आजादी चाहता है और उसके लिए प्रयत्नशील है, अपना मार्गदर्शक खुद बनना होगा।' जनता समय की मांग पर खरी उतरी और औपचारिक नेतृत्व विहीन आंदोलन को स्वतः स्फूर्तता के बल पर चलाती रही। इसी दौरान, 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर में सुभाषचन्द्र बोस ने अस्थायी आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की। उधर 18 फरवरी 1944 को बम्बई में नौ–सेना ने विद्रोह कर दिया था। इससे अंग्रेज सरकार और डर गई क्योंकि भारतीय सेना का विद्रोह उनके लिये विनाशकारी हो सकता था। इसके फलस्वरूप जनता भय मुक्त हो गई और इससे अंग्रजी शासन की नींव हिल गई। महात्मा गांधी द्वारा वर्ष 1942 में घोषित 'अगस्त क्रांति' का धरती में सुप्त बीज, 15 अगस्त 1947 को देश की आजादी के स्वर्णिम प्रभाव में पल्लवित हुआ। आखिर अंग्रजों को भारत छोड़ना पड़ा।

हमारे देश

सांघी गांव में सदाशिव राव भाऊ राय जी की गद्दी !

– राकेश सांगवान

कहूं तो हमारे देश में आधा इतिहास लिखा ही नहीं गया, जो लिखा गया उसमें भी आधा कहानियां बना कर घूमा दिया गया। हमारे देश का आधा इतिहास तो आज भी सिर्फ जनश्रुतियों में ही है पर अब जनश्रुतियों के इतिहास में भी काफी कुछ मिलावट कर दी गई है पर इन जनश्रुतियों से सही इतिहास का अंदाजा तो आ ही जाता है। पानीपत फिल्म को लेकर पेशवाओं का इतिहास चर्चा में है। पानीपत के युद्ध में पेशवाओं की हार हुई और हार के कारण सिर्फ पेशवाओं का घमंड और महाराजा सूरजमल के दिए सुझाव न मानना था। कहा यह जाता है कि इस युद्ध में जब सदाशिवराव भाऊ ने देखा कि उनके अजीज विश्वास राव की मृत्यु हो गई है तो वह हाथी से उतर कर घोड़े पर सवार होकर दुश्मन पर टूट पड़े। उनकी सेना ने जब उन्हें हाथी पर बैठा ना पाया तो उनका हौंसला टूट गया और युद्ध से भाग खड़े हुए, मारे गए। आगे फिर यह बताया जाता है कि सदाशिव राव युद्ध में मारा गया, तीन दिन बाद लाशों के ढेर में उनकी सर कटी लाश मिली जिसकी पहचान उनके कैंप के वकील ने की, अगले दिन फिर उनका सर मिला।

जबकि सदाशिवराव भाऊ पर जनश्रुति इतिहास कुछ और ही कहता है। लोग बताते हैं कि इस युद्ध में हार के बाद सदाशिवराव भाऊ अपनी जान बचाने के लिए भागा, अब्दाली की सेना उनके पीछे पड़ी थी। भाऊ रुखी गाँव पहुंचा और गांववासियों से उनकी जान बचाने और साथ देने की गुहार लगाई। रुखी गांववासियों ने भाऊ से कहा कि आप पास ही हुड्डा खाप है जो मजबूत खाप है, आप उनसे मदद की गुहार करे वह आपका साथ जरुर देंगे। भाऊ जिला रोहतक की हुड्डा खाप के गाँव सांघी पहुंचा और गाँव वालों से मदद मांगी। सांघी गाँव और हुड्डा खाप ने भाऊ की मदद की हामी भरी और भाऊ को अब्दाली के सिपाहियों से बचाने के लिए सांघी गाँव की किलाबन्धी कर दी। अब्दाली के सिपाही इस किलाबन्धी को नहीं तोड़ पाए और वापिस चले गए और इसके बाद सदाशिवराव भाऊ और पेशवाओं की औरतें बच्चे कुछ दिन यही हुड्डा खाप में रहे, जिन्हें बाद में महाराजा सूरजमल ने सकुशल महाराष्ट्र भिजवाया। जो जाट सैनिक इन औरत बच्चों को वहां छोड़ने गए थे उन्हें फिर पेशवाओं ने वहीं

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

जमीन देकर बसा लिया। आज भी महाराष्ट्र में जहाँ ये बसे हैं उन गाँव को जाट बाईसी बोला जाता है। इनमें पूनिया, सहरावत, सांगवान डांगी जैसे कई गोत्र हैं वहां पर। बताते हैं कि औरतें बच्चे सब वापिस चले गए पर भाऊ यही रहे और उसके बाद भाऊ ने कान पड़वा लिए और गुरु गोरखनाथ सम्प्रदाय के नाथ साधू बन गए और यही सांघी – खिड़वाली गाँव के सिमाणे में तप किया और यही उन्होंने समाधी ली। यहाँ वह सिद्ध साधू कहलाए और कुछ चमत्कार भी दिखाए। उनके नाम पर आज भी साल में एक बार उनकी समाधी पर मेला लगता है। सांघी गाँव के लाधी ठोले ने बारह–पंद्रह किले इस समाधी स्थान को दिए जिसे भाऊ की समाधी के ईलावा लाधीवाला के नाम से भी जाना जाता है। यह समाधी सांघी गाँव से खिडवाली गाँव जाते वक्त रास्ते में आती है। समाधी के ऊपर जो पत्थर लगा हुआ है उस पर लिखा भी हुआ है "सिद्ध शती बाबा भाऊ नाथ जी"। बाहर जो बोर्ड लगा है उस पर भी साफ लिखा है "श्री सिद्ध बाबा सदाशिव राव भाऊ राय जी की गद्दी"। अब एक इतिहास तो वह है जो इन इतिहासकारों की पोथियों में है और एक इतिहास यह है जो यहाँ की जनता बताती है। अगर जनश्रुति वाले इतिहास को माने तो साफ है कि पानीपत की लड़ाई का बहुत कुछ इतिहास जनता से छुपाया जा रहा है। एक भगौड़े को यौद्धा और शहीद के तौर पर दिखाया जाता रहा है। इसी झूठ के इतिहास के आधार पर कभी द ग्रेट मराठा सीरियल बनता है तो कभी पानीपत फिल्म, जिसमें सिर्फ एक पहलु की छवि को बढ़ाचढ़ाकर दिखाने के लिए दुसरे पहलु को बहुत ही गलत तरीके से पेश किया जाता है। भाऊ की समाधि स्थल की फोटो भेजने व कुछ अहम् जानकारियां देने के लिए सांघी गाँव के भाई हरेन्द्र हुड्डा पहलवान का बहुत बहुत धन्यवाद ।

गांधी जी के साथ राजा महेंद्र प्रताप को भी किया गया था नोबेल पुरस्कार के लिए नामित

– विष्णु शर्मा

आमतौर पर हाथरस जिले का भारत के नक्शे पर कोई बहुत महत्वपूर्ण स्थान नहीं बन पाया, आम आदमी उसे काका हाथरसी की नगरी के तौर पर जानता है, या हींग, घी, रंग, रबड़ी जैसे कुछ उम्दा प्रोडक्ट्स केंद्र के तौर पर। उसकी वजह भी है कि सरदार पटेल की तरह राजा महेंद्र प्रताप के साथ भी कांग्रेस सरकार के इतिहासकारों ने नाइंसाफी की, इस इंटरनेशनल क्रांतिकारी का कद कई मायनों में गांधी और बोस के करीब है, ये वो व्यक्ति है जिसने देश के भावी पीएम को चुनावों में धूल चटा दी, ये वो क्रांतिकारी है जिसने 28 साल पहले वो काम कर दिया, जो नेताजी बोस ने 1943 में आकर किया। ये वो व्यक्ति है, जिसे गांधी की तरह ही नोबेल पुरस्कार के लिए नॉमिनेट किया गया और उन दोनों ही साल नोबेल पुरस्कार का ऐलान नहीं हुआ और पुरस्कार राशि स्पेशल फंड में बांट दी गई।

एक दिसंबर 1886 को जन्में राजा महेंद्र प्रताप का सही से आकलन इतिहासकारों ने किया होता तो आज राजा को ही नहीं दुनिया हाथरस जिले को और उनकी रियासत मुरसान को भी उसी तरह से जानती, जैसे बाकी महापुरुषों के शहरों को जाना जाता है। आखिर कोई तो बात थी राजा में कि पीएम मोदी ने उदघाटन तो काबुल की संसद में अटल ब्लॉक का किया और तारीफ राजा महेंद्र प्रताप की की, वो भी तब जब राजा खुद को मार्क्सवादी कहते थे, यानी वामपंथी जो आरएसएस के सबसे बड़े विरोधी माने जाते हैं, लेनिन ने उनके क्रांतिकारों विचारों से प्रभावित होकर उन्हें रूस मिलने बुलाया था और राजा को अपनी जो किताब उपहार में दी, उसे वो पहले ही पढ़ चुके थे, टॉलस्टॉयवाद।

फ्रंटियर या सीमांत गांधी को जानने वाले आज लाखों मिल जाएंगे, लेकिन राजा महेंद्र प्रताप का नाम कितने लोग जानते हैं, मोदी ने सीमांत गांधी के साथ राजा महेंद्र प्रताप का नाम लिया और उनके और अफगानिस्तान के किंग के बीच की बातचीत को भाईचारे की भावना का प्रतीक बताया। महेंद्र प्रताप शुरू से ही आम शाही नवयुवकों की तरह नहीं थे। उनके पास मौका था कि वो भी राजाओं के बने संघ में शामिल होकर अंग्रेजों से अपने लिए बेहतर सुविधाओं की मांग करते और खुश रहते। लेकिन वो उनमें से नहीं थे, उनकी पढ़ाई मोहम्मडन एंग्लो ओरियंटल कॉलेज, अलीगढ़ में हुई, जो आज अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के तौर पर जाना जाता है। शुरू से ही अंग्रेज, मुस्लिम टीचर और मुस्लिम मित्रों के बीच रहने से राजा की सोच इंटरनेशनल हो गई। उनके अंदर क्रांति की लहरें हिलोरे मारने लगी। 1905 के स्वदेशी आंदोलन से वो इतना प्रभावित हुए कि अपने ससुर के मना करने के बावजूद वो 1906 के कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में हिस्सा लेने चले गए।

मार्क्सवादी होने के बावजूद उन्हें कांग्रेस के हिंदूवादी नेता बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल पसंद आते थे। हालांकि 1902 में ही जींद की सिख राजकुमारी से उनकी शादी हो गई। लेकिन उनके अंतरमन की आग आसानी से बुझने वाली नहीं थी। एक बार तो छुआछूत के खिलाफ लोगों

अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर–उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है। –मनु

को साथ लाने के लिए उन्होंने अलमोड़ा में वहां की नीची जाति के परिवार के घर में खाना खाया, तो आगरा में भी एक दलित परिवार के साथ खाना खाया।

19वीं सदी के पहले दशक में एक जाट और राजा के परिवार में कोई ऐसा सोचने की भी हिम्मत नहीं कर सकता था। फिर विदेशी वस्त्रों के खिलाफ अपनी रियासत में उन्होंने जबरदस्त अभियान चलाया। बाद में उनको लगा कि देश में रहकर कुछ नहीं हो सकता। लाला हरदयाल, वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय, रास बिहारी बोस, श्याम जी कृष्ण वर्मा, अलग–अलग देशों से ब्रिटिश सरकार की गुलामी के खिलाफ उस वक्त भारत के लिए अभियान चला रहे थे। उस वक्त तक जर्मनी में रह रहे भारतीय क्रांतिकारी बर्लिन कमेटी बना चुके थे, प्रथम विश्वयुद्ध को वो एक मौका मान रहे थे, जब इंग्लैंड की विरोधी शक्तियों से हाथ मिलाकर भारत को गुलामी से मुक्ति दिलाई जा सके।

राजा महेंद्र का नाम तब तक इतना हो चुका था कि स्विट्जरलैंड में उनकी मौजूदगी की भनक लगते ही चट्टोपाध्याय ने लाला हरदयाल और श्याम जी कृष्ण वर्मा को उन्हें बर्लिन बुलाने को कहा। बाकायदा जर्मनी के विदेश मंत्रालय से कहा गया उन्हें बुलाने को। लेकिन राजा ने खुद जर्मनी के किंग से व्यक्तिगत तौर पर मिलने की इच्छा जताई, इधर जर्मनी के राजा भी उनसे मिलना चाहते थे, जर्मनी के राजा ने उन्हें ऑर्डर ऑफ दी रैड ईगल की उपाधि से सम्मानित किया। राजा जींद के दामाद थे और उन्होंने अफगानिस्तान की सीमा से भारत में घुसने के लिए पंजाब की फुलकियां स्टेट्स जींद, नाभा और पटियाला की रणनीतिक पोजीशन की उनसे चर्चा की।

जर्मन राजा से काफी भरोसा पाकर वो बर्लिन से चले आए। बर्लिन छोड़ने से पहले उन्होंने पोलैंड बॉर्डर पर सेना के कैंप में रहकर युद्ध की ट्रेनिंग भी ली। उसके बाद वो स्विट्जरलैंड, तुर्की, इजिप्ट में वहां के शासकों से ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सपोर्ट मांगने गए, उसके बाद अफगानिस्तान पहुंचे। उन्हें लगा कि यहां रहकर वो भारत के सबसे करीब होंगे और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जंग यहां रहकर लड़ी जा सकती है।

आप जानकर हैरत में पड़ जाएंगे कि उस वक्त जब वो कई देश के राजाओं से अपने देश की आजादी के लिए मिल रहे थे, उनकी उम्र महज 28 साल थी और अगले 32 साल वो दुनिया भर की खाक ही छानते रहे..... दरबदर।

एक दिसंबर 1915 का दिन था, राजा महेंद्र प्रताप का जन्मदिन, उस दिन वो 28 साल के हुए थे। उन्होंने भारत से बाहर देश की पहली निर्वासित सरकार का गठन किया, बाद में सुभाष चंद्र बोस ने 28 साल बाद उन्हीं की तरह आजाद हिंद सरकार का गठन सिंगापुर में किया था। राजा महेंद्र प्रताप को उस सरकार का राष्ट्रपति बनाया गया यानी राज्य प्रमुख। मौलवी बरकतुल्लाह को राजा का प्रधानमंत्री घोषित किया गया और अबैदुल्लाह सिंधी को गृहमंत्री।

भोपाल के रहने वाले बरकतुल्लाह के नाम पर बाद में भोपाल में बरकतुल्लाह यूनीवर्सिटी खोली गई। राजा की इस काबुल सरकार ने बाकायदा ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जेहाद का नारा दिया। लगभग हर देश में राजा की सरकार ने अपने राजदूत नियुक्त कर दिए, बाकायदा वो उन सरकारों से बतौर भारत के राजदूत मान्यता देने की बातचीत में जुट गए। लेकिन उस वक्त ना कोई बेहतर सैन्य रणनीति थी और ना ही उन्हें इस रिवोल्यूशरी आइडिया के लिए बोस जैसा समर्थन मिला और सरकार प्रतीकात्मक रह गई। लेकिन राजा की लड़ाई थमी नहीं उनकी जिंदगी तो हंगामाखेज थी।

दिलचस्प बात ये थी कि जिस साल में राजा ने भारत की पहली निर्वासित सरकार बनाई, उसी साल गांधी जी साउथ अफ्रीका से भारत वापस लौटे थे और प्रथम विश्व युद्ध के लिए भारतीयों को ब्रिटिश सेना में भर्ती करवा रहे थे, उन्हें भर्ती करने वाला सर्जेंट तक कहा गया था।

राजा के सिर पर ब्रिटिश सरकार ने इनाम रख दिया, रियासत अपने कब्जे में ले ली, और राजा को भगोड़ा घोषित कर दिया। राजा ने काफी परेशानी के दिन झेले। फिर उन्होंने जापान में जाकर एक मैगजीन शुरू की, जिसका नाम था वर्ल्ड फेडरेशन। लंबे समय तक इस मैगजीन के जरिए ब्रिटिश सरकार की क्रूरता को वो दुनिया भर के सामने लाते रहे। फिर दूसरे विश्व युद्ध के दौरान राजा ने फिर एक एक्जीक्यूटिव बोर्ड बनाया, ताकि ब्रिटिश सरकार को भारत छोड़ने के लिए मजूबर किया जा सके। लेकिन युद्ध खत्म होते–होते सरकार राजा की तरफ नरम हो गई थी, फिर आजादी होना भी तय मानी जाने लगी। राजा को भारत आने की इजाजत मिली। ठीक 32 साल बाद राजा भारत आए, 1946 में राजा मद्रास के समुद्र तट पर उतरे। वहां से वो घर नहीं गए, सीधे वर्धा पहुंचे गांधीजी से मिलने।

गांधीजी और राजा में अजीबो–गरीब रिश्ता था, बहुत कम लोगों को पता होगा कि हाथरस के इस राजा को नोबेल पुरस्कार के लिए नॉमिनेट किया गया था और एक तय वक्त के बाद नोबेल कमेटी के कमेंट्स को सार्वजनिक कर दिया जाता है।

राजा के बारे में नोबेल कमेटी ने उस वक्त क्या लिखा था ये पढ़िए, Pratap gave up his property for educational purposes, and he established a technical college at Brindaban. In 1913 he took part in Gandhi's campaign in South Africa. He travelled around the world to create

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

awareness about the situation in Afghanistan and India. In 1925 he went on a mission to Tibet and met the Dalai Lama. He was primarily on an unofficial economic mission on behalf of Afghanistan, but he also wanted to expose the British brutalities in India. He called himself the servant of the powerless and weak?

सबसे खास बात थी कि नोबेल पुरस्कार समिति की इन्हीं लाइनों से ये पता चला कि वो गांधीजी के साउथ अफ्रीका वाले आंदोलन में भी हिस्सा लेने जा पहुंचे थे, इतना ही नहीं वो तिब्बत मिशन पर दलाई लामा से भी मिले थे। ऐसी इंटरनेशनल तबीयत के थे राजा महेंद्र प्रताप। उस साल किसी को भी नोबेल पुरस्कार नहीं दिया गया, सारी पुरस्कार राशि किसी स्पेशल फंड में दे दी गई। इसका गांधी कनेक्शन ये है कि बिलकुल ऐसा ही तब हुआ था, जब गांधीजी को 1948 में नोबेल पुरस्कार के लिए नॉमिनेट किया गया था, गांधी जी की हत्या होने के चलते बात आगे नहीं बढ़ी और उस साल भी नोबेल पुरस्कार के लिए किसी के नाम का ऐलान नहीं हुआ। सारा पैसा स्पेशल फंड में दे दिया गया।

नोबेल पुरस्कार समिति के कमेंट्स से ही पता चलता है कि गांधीजी ने एक बार राजा महेंद्र प्रताप की अपने अखबार यंग इंडिया में जमकर तारीफ की थी, गांधी जी ने लिखा था, "For the sake of the country this nobleman has chosen exile as his lot. He has given up his splendid property...for educational purposes. Prem Mahavidyalaya...is his creation, गांधीजी से उनके गहरे नाते की मिसाल देखिए, 32 साल बाद भारत आए तो सीधे उनसे मिलने जा पहुंचे, मद्रास से सीधे वर्धा। बावजूद इसके वो कांग्रेस में शामिल नहीं हुए। लेकिन उनकी हस्ती इस कदर बड़ी थी कि कांग्रेस तो कांग्रेस उस वक्त के जनसंघ के बड़े नेता और भावी पीएम अटल बिहारी वाजपेयी को भी लोकसभा के चुनावों में उन्होंने धूल चटा दी। वो 1952 में मथुरा से निर्दलीय सांसद बने और 1957 में फिर से अटल बिहारी वाजपेयी को हराकर निर्दलीय ही सांसद चुने गए। बिना किसी का अहसान लिए शान से राजा की तरह जीते रहे।

राजा महेंद्र प्रताप की उपलब्धियां यहीं कम नहीं होतीं, उनके खाते में भारत का पहला पॉलिटेक्निक कॉलेज भी है। अपने बेटे का नाम रखा उन्होंने प्रेम और वृंदावन में एक पॉलिटेक्निक कॉलेज खोला, जिसका नाम रखा प्रेम महाविद्यालय। राजा मॉर्डन एजुकेशन के हिमायती थे, तभी एएमयू के लिए भी जमीन दान कर दी। देश की आजादी के बाद लोग मानते थे कि उनसे बेहतर कोई विदेश मंत्री नहीं हो सकता था, लेकिन उन्होंने किसी से कुछ मांगा नहीं और आमजन के लिए काम करते रहे। पंचायत राज कानूनों, किसानों और फ्रीडम फाइटर्स के लिए लड़ते रहे।

राजा जो भी काम करते थे, वो क्रांति के स्तर पर जाकर करते थे। हिंदू घराने में वो पैदा हुए थे, मुस्लिम संस्था में वो पढ़े थे, यूरोप में तमाम ईसाइयों से उनके गहरे रिश्ते थे, सिख धर्म मानने वाले परिवार से उनकी शादी हुई थी। लेकिन उनको लगता था मानव धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है या सब धर्मों का सार ये है कि मानवीयता को, प्रेम को बढ़ावा मिलना चाहिए। राजा महेंद्र प्रताप ने तब वो कर डाला जो कभी मुगल बादशाह अकबर ने किया था, जैसे अकबर ने नया धर्म दीन ए इलाही चलाया था, वैसे भी राजा महेंद्र प्रताप ने भी एक नया धर्म शुरू कर दिया, प्रेम धर्म। इस धर्म के अनुयायियों का एक ही उद्देश्य था प्रेम से रहना, प्रेम बांटना और प्रेम भाईचारे का संदेश देना। हालांकि दीन ए इलाही की तरह प्रेम धर्म भी उसको चलाने वाले के साथ ही गुमनामी में खो गया। 29 अप्रैल 1979 में उनका निधन हो गया।

इतिहासः मोहम्मद गौरी ने जब चाटी थी हरियाणा की धूल

– डॉ. केसी यादव, विख्यात इतिहासकार

मोहम्मद गौरी अफगानिस्तान में स्थित एक छोटी सी रियासत गौर का शासक था। वह पहले दर्जे का धूर्त और महत्वाकांक्षी आदमी था। उसे गौर का छोटा राज्य किसी भी तरह से संतुष्ट नहीं कर रहा था, इसलिए उसने महमूद की तरह भारत पर आक्रमण करके उसे विस्तृत करने की योजना बनाई। उसने भारत पर कई आक्रमण किए। पहले पहल उसे असफलता मिली पर अंत में वह पंजाब पर कब्जा करने में कामयाब रहा। पंजाब के साथ हरियाणा प्रदेश की सीमाएं लगती थी। यहां उस समय पृथ्वीराज चौहान का राज था। पृथ्वी राज एक प्रचंड योद्धा था किंतु उसमें एक कमी थी। कमी ये थी कि शत्रु के खिलाफ गंभीरता से मोर्चा नहीं लगा पाना। इस सारी स्थिति का सही जायजा लेकर मोहम्मद गौरी ने 1191 में हरियाणा पर आक्रमण किया। पृथ्वीराज ने भी शत्रु की शक्ति को पहचानते हुए एक विशाल सेना के साथ दिल्ली से कूच किया। पश्चिमी हरियाणा की एक शक्तिशाली सेना हांसी के गवर्नर गोविंदराय के नेतृत्व में उससे आकर मिली।

करनाल के निकट तरावडी के स्थान पर दोनों पक्षों का आमना–सामना हुआ। कई दरबारी किस्म के इतिहासकार पृथ्वीराज की सेना की संख्या एक लाख घुडसवार और 30

अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर–उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है। –मनु

हजार पैदल सैनिक बताते हैं। परिश्ता इससे भी अधिक सेना बताता है। यहां भी मध्यकालीन इतिहासकारों की वही प्रवृति काम कर रही है, जहां वे शत्रु की सेना को अपने आका की सेना से कई गुना अधिक बताते हैं। तभी तो उनके आश्रयदाता की महानता अधिक दिखलाई पडेगी। अपने से दोगुनी और तिगुनी सेना को पीटने वाला ही तो पराक्रमी होता है।हमारे विचार में दोनों पक्षों की सेना बराबर ही रही होगी या पृथ्वीराज की कुछ अधिक रही होगी।

दोनों सेनाओं का नेतृत्व उनके शासक कर रहे थे। इध्र पृथ्वीराज और उधर मोहम्मद गौरी। युद्ध बडे ही प्रचंड रूप से शुरू हुआ। ज्यों ज्यों समय बीतता गया और भी घमासान होता गया। हांसी के राज्यपाल गोविंदराय की शूरवीरता लासानी थी। वह बडी बहादुरी से सेना का संचालन कर रहा था। मोहम्मद गौरी ने सीधा उसी पर प्रहार किया। गोविंदराय घायल होगया और उसके दो दांत भी टूट गए लेकिन उसने और पराक्रम के साथ युद्ध करना शुरू कर दिया। उसने सीधा अपना घोडा मोहम्मद गौरी पर चढा दिया और ऐसा प्रहार किया कि वह दर्द से तिलमिला उठा। वह बुरी तरह घायल होकर घोडे से गिरने ही वाला था कि एक खिलजी सरदार ने उसे संभाला और रणक्षेत्र से भगा ले गया। अपने सरदार के गायब होते ही अफगान सेना के पांव उखड गए। पृथ्वीराज की सेना ने भागती सेना का दूर तक पीछा किया और फिर खुशियां मनाते हुए लौट गए। उस पीटी हुए सेना अपने पराजित और घायल सुल्तान को लेकर गजनी पहुंच गई। जान बची लाखों पाए। इस पराजय को गोरी कभी नहीं भूल पाया। उसने अपने उन अमीरों को कठोर दंड दिया जिन्होंने लापरवाही बरती थी। उसने सेना को अनुशासन के साथ फिर से संगठित किया। उसने खुद पर बहुत अंकुश लगाए–जब से मुझे हिंद के शासक ने हराया है, मैंने अपने शरीर पर धारण कपडे नहीं बदले। मैंने उन खल्जी, गौरी और खुरासानी और गौरी अमीरों के चेहरे नहीं देख, जिनकी लापरवाही से मुझे पराजय का मुंह देखना देखना पडा। अब की बार अल्लाह पर विश्वास करके ही हिंद की तरफ कूच करूंगा।

सुल्तान ने एक साल तक भारत पर दोबारा आक्रमण की योजना बनाई। 1192 में उसने फिर से आक्रमण किया तो उसने अपनी सेना को चार भागों में बांटा। जब शत्रु के हाथी और पैदल सेना उन पर आक्रमण करे तो वे युद्ध विमुख होकर भागने का नाटक करे। इसके बाद जब वे अपनी सीमा से दूर आ जाएं तो पलटकर वार किया जाए। इस युक्ति के बावजूद युद्ध का फैसला नहीं हो सका। गौरी ने अपने 12 हजार सैनिकों को जिरहबख्तर और लोहे कीक टोपी पहनाकर नंगी तलवारों व भालों से सुसज्जित करके शत्रु पर आक्रमण किया। थकी हुई पृथ्वीराज की सेना इस वार को नहीं झेल पाई और उसके पांव युद्ध क्षेत्र में ही उखडने लगे। इससे गौरी की हिम्मत बढी उसने दूसरी तरफ भी ऐसा ही किया और पृथ्वीराज युद्ध हार गया। उसने रणक्षेत्र छोड दिया लेकिन थोडी दूर सरस्वती नदी के किनारे गौरी ने उसे मार दिया।

तरावडी के युद्ध ने पृथ्वीराज के भाग्य का फैसला कर दिया। जिन कारणों से हम गजनवी से हारे थे, वे ही यहां भी विद्यमान थे। पृथ्वीराज गौरी को हराकर जश्न में डूबे रहे वहीं गौरी ने सालभर तैयारी की और अपनी कमियां दूर की। मोहम्मद गौरी की सफलता का यही राज था।

गुप्त राजवंश का उत्पत्ति सम्बन्धी विवाद ?

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

गुप्त स्वयं में एक उपाधि है; या फिर वंशनाम अथवा कुलनाम भी है; यह विवाद बहुत गहरा और रहस्यमय है। क्योंकि इतिहासविदों ने प्रायःउन शासकों के नामान्त में आने वाले प्रत्यय जैसे गुप्त शब्द को ही उनका वंश अथवा कुल मान लिया है। जबकि विष्णुगप्त चाणक्य जैसा नाम हमें मौर्यकाल में भी मिल रहा है तो देवगुप्त शशांक नाम क्षत्रिय शासक का भी मिल रहा है। अतएव इसी आलोक में हमें गुप्त राजवंश की उत्पत्ति की ओर इन बातों पर लक्ष्य करना होगा। यथा–

1. कौमुदी महोत्सव नामक संस्कृत नाटक में चण्डसेन अथवा (चन्द्रगुप्त) को कारस्कर कक्कर खोखर बताया गया है। ऐसे निम्न कुलजन्मा व्यक्ति को ब्राह्मण रचनाकार ने राजत्व के लिए अयोग्य ही ठहराया है।(1)

2. यहाँ पर यह भी ज्ञातव्य है कि जो भी जाति–वर्ग ब्राह्मणों द्वारा रचित वर्णव्यवस्था की सामाजिक संरचना और उनके जटिल–कुटिल कर्मकांड को नही मानता था; वही व्यक्ति अथवा जाति–वर्ग वर्ण–विच्युत होकर शूद्र अथवा वषेल या व्रात्य–क्षत्रिय मान लिये थे। जैसीकि स्वयं मनु–स्मृति की साक्षी भी है–

शनकैस्तु क्रियालोपादिमा क्षत्रिय जातयाः
वर्षलत्वं गता लोके, ब्राह्मणामदर्शनात्।।(2)

3. उपर्युक्त नाटक में ही यह उल्लेख है कि चन्द्रगुप्त ने लिच्छिवियों के साथ विवाह–सम्बन्ध स्थापित किये थे इस आधार पर भी गुप्तों को व्रात्य–क्षत्रिय किवां शूद्र स्वीकार किया गया है क्योंकि ब्राह्मण शास्त्रकार एकतांत्रिक क्षत्रिय शासको के मुकाबले में गणों अथवा गणयंसघों को हेय एवं गर्हित ही मानते थे। ऐसा ही 'कौमुदी–महोत्सव' के रचनाकार का स्पष्ट अभिमत रहा है– ''म्लैच्छैः लिच्छिवि र्भिसह–सम्बन्ध।''(3) म्लेच्छ यहाँ पर लिच्छिवियों को ही कहा गया है।

प्रलय होने पर समुद्र भी अपनी मर्यादा को छोड़ देते हैं लेकिन सज्जन लोग महाविपत्ति में भी मर्यादा को नहीं छोड़ते। –चाणक्य

यहां पर यह कहना अयुक्तिपूर्ण नहीं होगा कि बाल्मीकीय रामायण में लिच्छिवि (लोहचव जाट) जैसे जनगणों को ही ऋक्ष और बानर के रूप में निरूत्पित किया गया है। भाषा–विज्ञान में लकार का ऋकार में परिवर्तन सहज संहज संभव है।(4)

4. वाकाटक महारानी प्रभावती गुप्ता जोकि गुप्त वंशजा थी, के एक अभिलेख में गुप्त राजवंश की वंशावली वर्णित है। जिसमें उनका गोत्र अथवा कुलनाम धारण बताया गया है। जोकि अमृतसर के धारीवाल (जाटों) का अपना ही गोत्र है। ये धारण वंशी जाट भारशिवों की अधीनता में उनके गोप्ता अथवा दुर्गरक्षक बनकर कौशाम्बी में आकर आबाद हो गये थे। इसी आधार पर श्री काशीप्रसाद जायसवाल ने उनको शूद्रप्राय; औरजाट ही मान्य किया है। (5)जोकि युक्तियुक्त ही है।

5. पूना से प्राप्त ताम्रपत्र में भी धारणों को जाट ही बताया गया है। आज पर्यन्त भी पंजाब के अमृतसर और बटाला से लेकर बीकानेर (करूजांगल–प्रदेश) से हरियाणा के तावडू के पास जौरासी और पलवल के पास स्थित जवाँ धारवालों के हैं। कुरूक्षेत्र और कैथल के मध्य में स्थित छौत गाँव भी इन्हीं लोगों का बड़ा गाँव हैं। अतः धारीवाल और धारण ही गुप्त संभव हैं।

(क) क्या गुप्त क्षत्रिय (राजपुत्र) थे?–

(1) सिरपुर नामक अभिलेख में चन्द्रगुप्त नामक शासक को चन्द्रवंशी राजा बताया गया है, जिसको चन्द्रगुप्त प्रथम माना गया है। जाट प्रायः स्वयं को चन्द्रवंशज ही मानते हैं।

(2) विहार के दरभंगा जिले के पचोभ नामक स्थान से प्राप्त लेख में भी गुप्तों का उल्लेख है जोकि स्वयं को पाण्डु–पुत्र अर्जुन का ही वंशधर मानते थे, और वे शैव मतावलम्बी थे। यहाँ पर यह ध्यातव्य है कि आज पर्यन्त भी अधिकांश चन्द्रवंशी जाट लोग स्वयं को पांडवों के ही उत्तराधिकारी समझते हैं। विशेषकर तँवर अथवा तोमर, कुन्तल, पांडव और सहरावत तथा डागर जैसे कुलनामधारी जाट जन अपना रक्तवंश का सम्बन्ध बड़े ही गर्व के साथ महाभारत के योद्धाओं के साथ जोडते हुए देखे जा सकते हैं। संयोग से सर्वाधिक सुदृढ़ पहलवान और खिलाडी भी इन्ही लोगों ने देश को दिये हैं।

(3) इस सबके विपरीत जावा (मलेशिया) से प्राप्त 'तन्त्रीकामन्दक' नामक ग्रन्थ में एक महाराजा ऐश्वर्यपाल का नामो ल्लेख आया है, स्वयं को इच्छवाकू वंशज (सूर्यवंशी) क्षत्रिय ही कहता है और इस आधार पर स्वयं को समुद्रगुप्त के वंशज होने की भी गर्वोक्ति वह स्वकथन में करता है।

(4) यहाँपर दो स्पष्ट करनी आवश्यक हैं। सर्वप्रथम तो क्षत्रिय एक–विन्यास विशेष है; वह कोई रक्त–वंश की वाचक संज्ञा सर्वथा नहीं है। वर्तमान में भी जिन राजपुत्रों को प्रायः ही ब्राह्मण शास्त्रकार अपने वर्गहितों अथवा आग्रहों के चलते केवल उन्हीं को क्षत्रिय स्वीकार करते है; उनका इजिहास में अस्तित्व ही मध्यपूर्व काल अथवा (सातवीं से दसवीं शताब्दियों) से पूर्व सिद्ध नहीं होता है। क्योंकि वह योद्धाओं की केवल एक उपाधि अथवा संज्ञा ही है। को रक्त–वंशवाचक प्रत्यय है। वर्तमान राजपूतों में भी नाना रक्त–वंशों के 36 राजकुलों का संघात है। सूर्य और बचन्द्रवंश कृत्रिम वंशावली है। यह भारत के मल नाग (आदिवासी) वंशजों का निर्मूल करने का ही ब्राह्मणीय उपक्रम है। वरना(6) कर्नल टॉड के मतानुसार जाट लोग शकमूल के अजट्टी–तक्षक नाग हैं।

(5) प्रथम से तृतीय शताब्दियों में ईरान में जो सासनी शासन स्थापित हुआ था; हाखमनी वंश का, वह भारत के सिन्धु और पंजाब तक भी फैला हुआ था। उसी काल में सीस्तानी अथवा शाकद्वीपीय शक या मग–ब्राह्मणों ने भारत में इरानियों के अनुकरण पर सूर्यपूजा प्रचलित की थी और सूर्यवंश अथवा वक्षु (ऑक्सस) नदी–घाटी से आने वाले राजवंशों को ऐच्छवाकव अथवा सूर्यवंशज बताकर उनका अतिरिक्त गर्वगान किया था।

दूसरी ओर हरियाणा के इतिहास लेखक डॉ. बुद्धप्रकाश जैसे लोग स्वयं जाटों को ही वक्षु अथवा ऑक्सस या आमूदरिया के पार से भारत वर्ष में आया हुआ मानते हैं, अतएव वे भी स्वयं को सूर्यवंशज ही मानते हैं।(7)

ऑक्सस से ही संस्कृत का एच्छवाकव शब्द निष्पन्न है। और तो क्या, अब नई खोजों के आधार पर पाकिस्तान स्थित पाकपत्तन अथवा अजोधन को सही इतिहासकार आदि अयोध्या मानने लगे हैं। वहीं पर वर्तमान में रामढेरी नामक गाँव है जोकि पौराणिक राम की वास्तविक और मूल जन्मभूमि संभव है। श्री के.सी.दहिया और बिहार के लेखक श्री हिमेश गुप्त ने भी इसी ओर संकेत किया है।

(6) जिस सुन्दर वर्मन ने चण्डसेन को गोद लिया है और उसको अपना दत्तक पुत्र बनाया है, हिन्दू धर्मशास्त्रों के आधार पर वह क्षत्रिय ही सिद्ध होता है। अतएव इस अधार पर चन्द्रसेन अथवा चन्दगुप्त भी इसी आधार पर क्षत्रिय ही सिद्ध होता है। गोत्रदान ही गोदनामा (वर्तमान में तो) माना जा सकता है। लेकिन यहाँ पर समस्या यह उठ खड़ी होती है कि आखिर चण्डसेन या चन्द्रगुप्त को एक क्षत्रिय (जन्मजात) शासक का दत्तक पुत्र क्यों बनना पड़ा क्योंकि ब्राह्मण–पुरोहित उन्हीं का राज्याभिषेक किया करते थे। चार प्रकार के पुत्रा शास्त्र में वर्णित हैं–(1) औरस (मूल) (2) दत्तक (गोद लिया हुआ) (3) क्षेत्रज (दूसरे की पत्नी से उत्पन्न) (4) जारज या दासीपुत्र जोकि दासी से समुत्पन्न हो। इनमें भी औरस पुत्रा ही प्रथम स्थानीय महत्त्व का अधिकारी था तो दत्तक द्वितीय वर्ग में ही आता है। फिर क्षत्रियंमन्य राजपुत्रों में दत्तक को दायभाग का सम्पूर्ण उत्तराधिकारी नहीं माना जाता; जबकि शूद्रों में जारज और दत्तक सन्तानें भी दायभाग की उचित हकदार हैं।

(पाद–टिप्पणी) इस विषय में हम दो–तीन न्यायालय के निर्णयों को भी देख सकते हैं। जैसेकि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मान्य न्यायाधीश सर जस्टिस ज्वालाप्रसाद सहाय ने कायस्थों के एक ऐसे ही दत्तक और जारज पुत्र को दायभाग का अनाधिकारी मानकर ही सारी ही कायस्थ जाति को क्षत्रिय घोषित कर दिया था अपने निर्णय में। वरना उससे पूर्व वह शूद्र ही मानी जाया करती थी। इसके विपरीत

लाहौर उच्च न्यायालय के सर शादीलाल जैसे न्यायमूर्ति ने जाटों को इसी आधार पर शूद्र (प्रायः) ही सिद्ध किया था कि उनमें पुर्नविवाह अथवा विधवा–विवाह से पूर्व समुत्पन्न दीधिषु सन्तान को भी दायभागीय सम्पत्ति में समान हिस्सेदारी मिलती है। यदि सारे ही ब्राह्मण धर्मशास्त्रों और पुराणों ने गुप्तों को शूद्रप्रायः अथवा वर्षल क्षत्रिय माना है तो उसका कारण उनका .पुर्नविवाह की वैदिक प्रथा का परिपालन ही है। क्योंकि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपने अग्रज रामगुप्त, उपनाम कच का वध करके उसकी धर्मपत्नी ध्रुवस्वामिनी के साथ विधवा–विवाह रचाया था।

यहाँ पर यह ज्ञातव्य है कि स्मार्त (सनातनी) पौराणिक पण्ड़ित या ब्राह्मण विधवा–विवाह को वर्जित ही मानते थे। इसी आधार पर उन्होंने उत्तरभारत की जाट–गूर्जर एवं आभारी (अहीर) जैसी जातियों को शूद्र संवर्ग अथवा वर्षल या व्रात्य क्षत्रिय वर्ग में ही रखा था। जो स्त्री क्षत्राणी विधिवत् रूपेण ब्राह्मण–पुरोहितों के हाथों से पाणि–ग्रहण संस्कार सम्पन्न कराकर विवाहित होती थी, वही रानी कहलाती थी और उसी से समुत्पन्न संतान ही राजपुत्र कहलाती थी मध्यपूर्व काल में। और जो कृषक कुल की 'रम्य रमणिया' करेवा की प्रथा अथवा 'नाता' प्रथा को अपनाकर या 'देवर की चूडियाँ और चद्दर डलवाकर लोकलीक के आधार पर पुर्निविवाह रचाकर पुर्नजीवन पाकर मंगलगीत गाती थी, वही ब्राह्मण पुरोहितों की दिव्यदृष्टि में दासियाँ थी और उनकी संतानों भी दासीपुत्र या व्रात्य और सत्शूद्र थीं। इसके विपरीत जो स्त्रियाँ सती जैसी क्रूर और अमानवीय कुप्रथा के चलते भी जीते–जी आग में जल मरती थीं वही विप्र देवों के धर्मशास्त्रों के मतानुसार स्वर्ग और मोक्ष की उचित अधिकारी थी।(10)

(ख) क्षत्रिय वर्गीय आधारः

1. धारवाड (मुम्बई) के गुल्ल गुहिल गुट्टा नरेश स्वयं को उज्जैन के नरेश चन्दगुप्त विक्रमादित्य के वंशज मानते थे। बम्बई गजेटियर में चन्द्रगुप्त को विक्रमादित्य क्षत्रिय लिखा गया है।

2. यद्यपि गुप्त सम्राटों ने भी स्वजाति का उल्लेख नहीं किया है, तथापि परवर्ती लेखों में उसका उल्लेख मिलता है। यथा, मध्यप्रदेश के गुप्तवंशीय नरेश महाशिव गुप्त की सिरपुर (रायपुर वर्तमान में छत्तीसगढ) की प्रशस्ति में गुप्तों को चन्द्रवंशीय क्षत्रिय गया है।

3. डॉ० पी.के जायसवाल ने भी बौद्ध धर्मग्रन्थ 'मञजूश्री मूलकल्प' के आधार पर गुप्तों को क्षत्रिय ही सिद्ध किया है।

4. 'कौमुदी–महोत्सव' संस्कृत नाटक में गुप्तों का विवाह–सम्बन्ध वैशाली के लिछिवियों के साथ दर्शाया गया है। जबकि गण–संघ ब्राह्मणों की सांस्कृतिक दृष्टि से सम्भ्रान्त क्षत्रिय नहीं थे, वरन व्रात्य किवां वर्षल (पतित) क्षत्रिय ही माने जाते थे। अतएव लिच्छिवियों के साथ विवाह–सम्बन्ध भी उन्हें उन्हीं के समकक्ष सिद्ध करता है।

5. वर्द्धमान महाबीर के पिता ने लिच्छिवि (लोहचब जाट वंश) की राजकुमारी त्रिशाला के साथ विवाह रचाया था। महाबीर के जर्त (जट्ट) कुल के गणमुख्य महाबीर के पिता जबकि क्षत्रिय ही माने जाते हैं जोकि वर्तमान में जाठर या जथरिया बिहार में कहलाते हें। जबकि पातञजति अपने महाभाष्य में बाहीक या पंजाब के सारे ही लोगों को जर्तगण से सम्बन्धित होने के कारण जार्तिक ही मानते हैं। वही लोग पूर्व में पहुँचकर ब्राह्मणीय प्रभाव में उच्चकोटि के हिन्दुओं में जाकर जथरिया भूमिहार बन गये हैं जोकि अब भी आधे क्षत्रिय और आधे ब्राह्मण ही माने जाते हैं।

निष्कर्ष यह है कि बौद्ध धर्मग्रन्थ और जैन धर्मशास्त्र गुप्तों को क्षत्रिय सही स्वीकार करते हैं लेकिन ब्राह्मण धर्मशास्त्रकारों की भेददृष्टि में वे क्षत्रिय (कुलीन) थे क्योंकि उन्होंने विधवा–विवाह रचाया था। मुनस्मृति में ब्राह्मण धर्माचार्यों की बात न मानने वाली योद्धा जातियों को ही व्रात्य या वर्षल क्षत्रिय कहा गया है। श्लोक है– वर्षलत्वं गतालोके ब्राह्मणाम्दर्शनात्

(ग) वैश्य वंश सम्बन्धी मतः

बहुत से इतिहासकार गुप्तों की इस उपाधि के आधार पर ही उन्हें वैश्य सिद्ध करना चाहते हैं। जैसेकि एलन. एस.के.आंयगर अनन्द सदाशिव अल्तेकर रोमिला थापर एवं डॉ. रामशयण शर्मा इसी मत के इतिहासज्ञ हैं। उन्होंने अपनी उपर्युक्त स्थपना का आधार विष्णु पुराण के उस श्लोक को बनाया है, जिसमें यह कहा गया है कि ब्राह्मण अपने नाम के शर्मा तो क्षत्रिय वर्मा तो वैश्य वर्ग के लोग गुप्त या शूद्र दास संज्ञा का उपयोग करें। अतएव उपर्युक्त विद्वान केवल गुप्त संज्ञा या उपाधि के आधार पर ही इस राजवंश को गुप्त वंशज मानते है; जबकि नामान्त की यह संज्ञ अथवा प्रत्यय केवल पूर्णतापरक ही है। यदि हम गुप्त शब्द को नामान्त में मानकर वंश या कुल का निर्धारण करेंगे तो फिर हर्षचरितम में वर्णित हर्षवर्धन के प्रबल प्रतिद्वन्दी उज्जैन के शासक देवगुप्तको भी हमें वैश्य ही स्वीकार करना पड़ेगा जबकि उसको इतिहास में क्षत्रिय ही स्वीकार किया गया है।

यदि ऐसा ही हम मानेंगें तो फिर मौर्यकाल के महामात्य विष्णुगुप्त चाणक्य को भी हमें ब्राह्मण की बजाय के वैश्य ही मानना पडेगा। इसी प्रकार से मौर्यवंश के मूल संस्थापक शशिगुप्त उपाख्य चन्द्रगुप्त को भी हमें वैश्य वंशज ही मानना पडेगा। वह पश्चिमोत्तर के अश्मक अश्वग असिहाग सिहाग जैसे जाट गण का ही कुलभूषण था। यही संकेत सेठ गोबिन्ददास द्वारा रचित ऐतिहासिक नाटक–शशिगुप्त और उसकी प्रस्तावना से भी मिलता है।

इसी परम्परा में डॉ० हेमचन्द्र रायचौधरी जैसे बंगाली ब्राह्मण विद्वान लालकुंड (मैसूर) के कदम्बवंशी शासक काकुस्थ वर्मा द्वारा स्वपुत्री का विवाह गुप्तों के साथ करने के कारण ही उन्हें कदम्ब वंशी या मानव्य (मेनन) ब्राह्मण मानते हैं। यद्यपि शासक लोग कन्या धन किसी भी कुल–वंश से ले–दे सकते थे। यदि चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनानी सेल्यूकस की सुपूत्री के साथ विवाह रचा लिया था तो क्या वह यूनानी या यवन ही हो गया था? फिर यदि हम नामान्त में गुप्त संज्ञा अथवा गोप्ता (दुर्गरक्षक) की उपाधि को भी वंशवाचक मानकर चलें तदपि शासक श्रीगुप्त के पश्चात दूसरे ही शासक का नाम केवल कटोत्कच (कटोच) ही है। इसलिए केवल नामान्त की संज्ञा अथवा उपाधि ही वेंश की वाचक नहीं हो सकती। उपर्युक्त आधार पर गुप्त शासक जाटवंशज ही सिद्ध होते हैं। पहले वे भवदत्त या नागदत्त नामक नाग शासक के ही सामन्त थे। समुद्रगुप्त ही इस राजवंश का सर्वप्रथम स्वतंत्र शासक और भारत विजेता सम्राट् था।

हम हमेशा कठिनाई के स्थान पर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं। जबकि कठिनाई से वही निपट लेना श्रेष्ठ होता है। –अज्ञात

We, the Jats

- Suraj Bhan Dahiya

Jats have unfortunately produced no eminent historian and few have evince interest in removing cobwebs of ignorance from their minds and know their true past. Jats are awaiting moral regeneration.

The history of this valiant and ancient Aryan race had been ether destroyed or distorted beyond recognition and did not exist in any worth-while book form. Facts can be suppressed sooner or later it will surface. But peevish do not float on The sea, waiting to be scooped and that we have to dive to great depths to harvest them. I can't express the agony' am going thrush every day to dismantle this dichotomy. this is a great challenge and mind it great challenge make. The great race. Trust in your self we are the great minds, great people-diamond is nothing more than a stone until t is cut and polished. we need to avoid routine Practices and adopt a creative frame of mind to achieve success-winds do not always provide what ships need.

Building a civilization requires a joint efforts and we are heirs to a great civilization so we must certainly have to labour hard to connect your glorified past with a rigorous joint zeal. History shows no mercy for lazy and weaklings.

We are in gratitude to col. Tod Lt R.S Joon, Capt. Dalip Singh and B.S Dahiya for monumental works on Jat History. They have showed us the path to surface the history of the Jats. But No university, no research organization nor any individual has come forward in this regard, B.S. Dahiya in his book 'Jats - The ancient Rules' has suggested that for a correct interpretation of Jat ancient history (and also medieval history) we have to study the movements of ideas and people, there exploits and aims from the wall of China to Black Sea in the west and Egypt and Sumer in the South/West. Take it - History is the people and Jat history revolves around the common Jat Folk.

No Community can afford to Sit-back and relax, regardless of its glorious past. Histories are made and unmade in short intervals. Complacency kills and this is exactly where Jats faltered stumbled and fell flat remains from ancient to medieval and to The present. In The present Scenario Jats have gone into oblivion a denial of their existence in the eye of history. We must be very concerned that the history presented as ours is only a bit of our history. What of the history of the ' history less' The anonymous people who in their collective acts their work daily lives and fellowship have forged our society through centuries. And we have ended with the singularly useless history celebrating individuals narration their biographies erecting monuments there for their families. These have left the large mass of our people out of history without history. How ? Any explanation? Mute!

Have some courage be muteless we are not history less commit to write Jat illuminations history and it can be radicalised by breaking from the paradigms of pre-independence vintage . May I encourage an impartial to write Jat history. let cite the plight of Jat peasantry m there words "they are the people who, toiling under a mid-day sum and wading through knee-deep mud with a pain of all-rib bullocks and a borrowed, blunted plough are raisins the crop. Are they corniness in for a share of prosperity ? or a piece of history pegs?" I would say "No" Not a bit they are not coming in for a particle of The prosperity or for a word of history? this is a great tragedy of our history of pre-independence era. But they were the real history people and dared against the British to start the First war of Independence in 1857. let in start Modern jat History from with the perspective, The revisionist historians must take my the coll.

The Jat community by and large cong in de itself for only professions handed down by its ancestors farming or soldering and excelled in both. They have lived from times immemorial on the most fertile part of North-Western part of India. They did not find necessary to spread into less fertile hilly tracts to the North, the waste lands of central India or the deserts in the Southern and Western parts of Rajasthan. Jats, there give become thinner as one goes further East or South of Delhi.

That is Why the area around Delhi is known as the Jat Heart Land. Now They Have invaded other domains too. Caste is a very strong bond for the Jats. While individuals are related by fameless castes link the families. The Jat community by reorienting itself seems to be handling modernity well. The community well knit through its traditional Khap panchayats. The Khap panchayats continue to make new s with their belligerent stand for what some people call their archaic code of honour and retrograde thinking. The panchayats however refuse to buy the agreement. They Served their people for thousands of years and they are still useful in many ways. The modern elites see Jat caste as a political nuisance. But they seem to be unaware that its perceived nuisance in politics. Can be mitigated by promotions the economics potential of the caste. Elite India dilemma about the Jats Seems to be out dated and biased.

Jats maintain both friendship and enmity for generations. An old Jat would not due in peace unless he has explained to his descendant, the good or evil deeds done unto him by others and taken promise for a return favour or revenge. From some time past, the Jats continued to remain in the 35+1 boiling cauldron. And when the moment came they proved their might. The united Jats are unbeatable, it is their hasti, Metcalfe, well known British administrator has put on record: "Jat khaps seem to last where nothing else lasts. Dynastyaster dynasty tumbles down, revolution succeeds revolution, Hindu, Pathan, Mughal, Maratta, Sikh, English are masters in turn, but the Jat community remains the same-virile and agile." Let the community remain in the annals of history. Onus lies with you.

इस बार हरियाणा में जाट M.L.A बने

क्र.सं	विधान सभा	एमएलए
1.	लाडवा	चौ. मेवा सिंह
2.	पेहोवा	संदीप सिंह भुंदर
3.	कालायात	कमलेश ढांडा
4.	उचाना	दुष्यंत चौटाला
5.	जुलाना	अमरजीत ढांडा
6.	सफीदों	सुभाष देशवाल
7.	आसंध	शमशेर सिंह विर्क
8.	पानीपत देहात	महीपाल ढांडा
9.	गन्नौर	निर्मल चौधरी
10.	सोनीपत	सुरेन्द्र पवार
11.	गोहाना	जगबीर मलिक
12.	बड़ौदा	श्रीकृष्ण हुडा
13.	किलोई	भूपेंदर सिंह हुडा
14.	मेहम	बलराज कुंदू
15.	बेरी	रघुवीर कादयान
16.	बहादुरगढ़	राजेन्द्र जून
17.	बादशाहपुर	लाकेश दौलताबाद
18.	दादरी	सोमवीर सांगवान
19.	तोशाम	किरण चौधरी
20.	लोहारू	जेपी दलाल
21.	बाधरा	नैना चौटाला
22.	बरवाला	जोगी राम सिहाग
23.	टोहाना	देवेन्दर बाबली
24.	हथीन	प्रवीण डागर
25.	ऐलनाबाद	अभय चौटाला
26.	रनिया	रणजीत चौटाला

नोटः संभावना है कि एक–दो नाम छूट गये हो। भूल के लिए क्षमा करें।

भारत में जाटों के भवन

1. जाट/भवन, नजफगढ़, दिल्ली
2. जाट भवन केशवपुरम, दिल्ली
3. जाट भवन, रोहतक, हिसार, जीन्द
4. जाट भवन, हिसार
5. जाट भवन, जीन्द
6. जाट भवन, जयपुर
7. जाट भवन, करनाल,
8. जाट भवन, हांसी,
9. जाट भवन, बहादुरगढ़
10. जाट भवन, मेरठ
11. जाट भवन, कुरूक्षेत्र,
12. जाट भवन, सिरसा,
13. जाट भवन कैथल
14. जाट भवन, कपाल मोचन, यमुनानगर
15. जाट भवन, मुज्जफरनगर
16. जाट भवन, आगरा
17. जाट भवन, भोपाल
18. जाट भवन, चंडीगढ़,
19. जाट भवन पंचकुला
20. जाट भवन, मुबंई
21. जाट भवन, सवाई माधोपुर
22. जाट भवन, अलवर
23. जाट भवन, उज्जैन
24. जाट भवन, इन्दौर
25. जाट भवन, बम्बई
26. जाट भवन, खरगौन, म. प्र.
27. जाट भवन, अहमदाबाद
28. जाट भवन, मद्रास
29. जाट भवन, बैगलोर
30. जाट भवन, फरीदाबाद
31. जाट भवन, सूरत (गुजरात)
32. जाट भवन, देहरादून
33. जाट भवन, भरतपुर
34. जाट भवन, जम्मू,
35. जाट भवन, कटड़ा (जम्मू) निर्माणधिन।
36. जाट भवन, देहरादून निर्माणधिन।

नोटः भारत की राजधानी दिल्ली के चारों तरफ जाटों की बसावट है। लेकिन अभी तक दिल्ली में कौम की पहचान का भव्य 'जाट भवन' का निर्माण बाकी है। महाराज सूरजमल स्मारक के तौर पर सूरज पर्वत निकट नेहरू पैलेस पर भव्य जाट भवन निर्माण का प्रयास किया जा रहा है।

विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। –बिनोवा भावे

खेती को बड़े आर्थिक सहारे की जरूरत

– केसी त्यागी

आर्थिक मंदी की स्थिति की खेती–बाड़ी में जान फूंक कर ही अर्थव्यवस्था को पुनः पटरी पर लाया जा सकता है। केन्द्र सरकार को इन पर ध्यान देने की जरूरत है। अधिक जानकारी के लिये पढ़े यह रोचक लेख।

हरियाणा, महाराष्ट्र एवं झारखंड विधानसभा चुनावों के मद्देनजर किसानों केबीच रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्यों यानी एमएसपी में उत्साहजनक बढ़ोतरी को लेकर आस जगी थी, लेकिन कृषि मंत्रालय द्वारा रबी फसलों के प्रस्तावित एमएसपी में पांच से सात फीसदी तक की बढ़ोतरी किसानों की उम्मीदों पर पानी फेरने जैसा कदम है। दरअसल कृषि मंत्रालय द्वारा गेहूं, जौ, सरसों, मसूर तथा सूरजमुखी के एमएसपी में क्रमशः 4.61 फीसदी, 5.9 फीसदी, 5.35 फीसदी और 5.4 फीसदी की बढ़ोतरी की गई है। ज्ञात हो कि पिछले मौसम के दौरान इनका समर्थन मूल्य प्रति क्विंटल क्रमशः 1840 रुपये, 1440 रुपये, 4475 रुपये तथा 4945 रुपये था। गत वर्ष की कीमतों को आधार मानकर देखें तो निःसंदेह मंत्राालय ने इस वर्ष एमएसपी में औसतन चार से सात फीसद तक की बढ़ोतरी की है, लेकिन यह नाकाफी भी है और किसानों की आय दोगुनी किए जाने के प्रधानमंत्री के आश्वासन को धूमिल करती प्रतीत हो रही है।

वर्ष 2019–20 के लिए खरीफ फसल–धान, मूंग, उड़द तथा कपास के एमएसपी में भी प्रति क्विंटल क्रमशः 65,75, 100 एवं 150 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। खरीफ वर्ष 2018–19के लिए साधारण धान के एमएसपी में 200 रुपये प्रति क्विंटल का इजाफा निःसंदेह उत्साहित करने वाला रहा था। लंबे अर्से के बाद इसकी कीमत 1750 रुपये क्विंटल निर्धारित की गई थी जो कि घोषित 1166 रुपये के लागत मूल्य से 50. 09 फीसदी अधिक थी। इससे पहले के वर्षों में एसएमपी में सिर्फ 50 से 60 रुपये प्रति क्बिंटल जैसी सांकेतिक बढ़ोतरी ही प्रचलन में रही थी। नई कीमतों में आंकड़ों के लिहाज से वृद्धि जरूर हुई है, लेकिन प्रति वर्ष लागत मूल्यों में हो रही बढ़ोतरी की तुलना में यह नाम मात्र ही है। प्रधानमंत्री ने 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने का वादा किया है, लेकिन कृषि मंत्राालय के अब के प्रयासों में कोई ठोस पहल देखने के नहीं मिली है। फसलों का उचित मूल्य न मिल पाना और साथ ही लागत मूल्यों में निरंतर वृद्धि होते रहना उनकी आदमनी में दोगुनी वृद्धि का संकेत नहीं दे रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश दहलानों की थोक कीमत अपनी तीन वर्ष की कीमत से लगभग 15 से 30 फीसदी के निचले स्तर पर है। फसलोंके लिए निर्धारित एमएसपी भी न मिल पाना किसानों के लिए लंबे समय से बड़ी समस्या बनी हुई है। सिरिल की एक रिपोर्ट के अनुसार किसानों को धान, रागी, बाजार, मूंग, उड़द, अरहर, सोयाबीन, सरसों आदि निर्धारित एमएसपी से कम कीमतों पर बेचना पड़ा है।

हालिया वर्षों में देश में फसल उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है। इसके अनुरूप मांग न होने के कारण कृषि उत्पादो की कीमतों में गिरावट भी देखी गई है। इसके साथ ही खेती में इस्तेमाल हाने पाली सभी सामग्रियों की कीमतों में वृद्धि दर्ज हुई है। आरबीआई की एक रिपोर्ट के अनुसार डीजल का थोक मूल्य सूचकांक यानी डब्ल्यूपीआइ वर्ष 2016 में 65 था जो अब बढ़कर 94 तक पहुंच गया है। कीटनाशकों का डब्ल्यूपीआइ पिछले तीन वर्षों में 110 से 120 तक पहुंच गया है। इसी तरह पिछले तीन वर्षों के दौरान ट्रैक्टर , बिजली, मवेशियों के चारे, मजदूरी आदि की दरोंमें भी प्रतिवर्ष लगभग पांच से 10 फीसदी की बढ़ोतरी देखी गई है। गत वर्षों के दौरान कृषि मजदूरी में भी लगभग 15 फीसदी की वृद्धि आंकी गई है। खासकर मजदूरी और खाद के मोर्चे पर बढ़ी महगांई ने किसानों को सबसे ज्यादा परेशान किया है। इस सूरत में कृषि मूल्य एवं लागत आयोग को जमीनी सच्चाई को समझते हुए लागत मूल्य निर्धारण करने की आवश्यकता है।

मौजूदा सरकार ने फसलों की कीमत को डेढ़ गुना करने वाला अपना वादा निभाने का प्रयास भर किया है, लेकिन एमएस स्वामीनाथन आयोग की अनुशंसा अनुसार फसलों का एमएसपी तय करने से अब तक परहेज हो किया है। वर्तमान लागत मूल्य निर्धरण प्रक्रिया के तह ए–2 एफ–एल को आधार बनाकर फसलों की लागत मूल्य के अनुपातिक एमएसपी बढ़ाया गया है, जबकि किसान संगठनों की मांग रही है कि सी–2 प्रणाली को आधार बनाकर लागत मूल्य निर्धारित किया जाए और इस पर 50 फीसदी का अतिरिक्त लाभ दिया जाए। स्पष्ट हे कि गतिरोध लागत मूल्य निर्धारण प्रक्रिया को लेकर ही है। प्रक्रिया ए–2 एफ–एल के तहत खेती में उपयोग होने वाली सभी वस्तुएं जैसे–बीज, उर्वरक, कीटनाशक, मजदूरी, मशीनों का किराया तथा पारिवारिक श्रम शामिल होती हैं जबकि सी–2 व्यवस्था में अन्य लागतों के साथ भूमि का किराया भी जोड़ा जाता है। इसके तहत लागत मूल्य निर्धारण से किसानों को मिलने वाले दाम और मौजूदा व्यवस्था के तहत मिलने वाले दाम में बड़ा अंतर है।

अपने यहां एक समस्या यह भी है कि किसान को हर हाल में घाटे का सामना करना पड़ता है। उत्पादन अच्छा हो तब भी और न हो तब भी। लगभग प्रत्येक वर्ष आलू, प्याज,

मनुष्य की बुराइयां दीर्गजीवी और अच्छाइयां अल्पायु होती हैं। –शेक्सपीयर

टमाटर,हरी मिर्च और मौसमी सब्जियां आदि औने–पौने दामों पर बेच दी जाती हैं और जब वह दाम भी नहीं मिलता है तो रोष स्वरूप किसान उन्हें सड़कों पर फेंक देते हैं। वहीं शांता कुमार कमेटी की रिपोर्ट में यह बात कही गई भी कि मात्र छह प्रतिशत किसान ही एमएसपी से लाभान्वित हो पाते हैं। वर्ष 2019–17 की एक रिपोर्ट के अनुसार देश भर में उत्पादित गेहूं एवं चावल का क्रमश। 23 एवं 35 फीसदी हिस्सा ही सरकारी एजेंसियों द्वारा खरीदा गया था। कृषि मंत्रालय भी इस तथ्य को स्वीकार करता है कि किसानों को निर्धारित एमएसपी नहीं मिल पाता है। इससे एमएसपी प्रणाली के क्रियान्वयन का अन्दाजा लगाया जा सकता है। भंडारण क्षमता एवं भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) की क्रियान्वयन प्रक्रिया भी सवालों के घेरे में रही है।

इनका प्रतिकूल असर यह है कि प्रतिवर्ष खेती का रकबा घट रहा है। किसान तेजी से मजदूर बन रहे हैं और रोजगार की तलाश में गांवों से पलायन जोरों पर है। चूंकि वैश्विक मंदी के कारण शहर पहले से बेरोजगारी की मार झेलने को मजबूर है, एसे में एक बार फिर से खेती–बाड़ी में जान फुंकने जैसी कवायद ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनः पटरी पर लाने में कामयाब हो सकती है जिससे पलायन पर भी काबु पाया जा सकेगा। कुल मिलाकर लाभकारी एमएसपी के निध ारण एवं क्रियान्वयन, उचित मुआवजा, ऋण, कृषि सब्सिडी, किसान पेंशन आदि सुविधाएं इस दिशा में कारगर साबित हो सकती है।

(दै. जागरण से साभार)

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 23.11.91) 28/5'3" M.Sc. Physics from Kurukshetra University. B.Ed. Working in State Bank of India as Assistant on regular basis at Kaithal. Father retired from Mandi Board. Wanted educated match working in Government Sector, Banking or MNC reputed Co. Avoid Gotras: Sangroha, Nain, Kaliraman. Cont.: 9466569366*
- *SM4 Jat Girl (20.08.88) 5'3" BAMS, MHA Father Government officer (Rtd.) Sonepat. Avoid Gotra : Malik, Phaugat, Antil. Cont.: 9416770274.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 09.11.94) 25/5'4" M.Sc. Math. B.Ed. Avoid Gotras: Panwar, Jani, Kaliraman. Cont.: 9416083928*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.09.90) 29/5'6" B.Tech. (I.T)., MA (English) from Punjab University Chandigarh. NET qualified. Avoid Gotras: Nain, Chahal, Rathi, Sharan. Cont.: 9463087328*
- *SM4 Jat Girl (DOB 02.08.92) 27/5'7" M.Sc. (Physics), from P. U. Chandigarh. B.Ed. CTET, HTET, PSTET cleared. Avoid Gotras: Jakhar, Poonia, Jaglan. Cont.: 9569808269*
- *SM4 Jat Girl (DOB 02.12.94) 25/5'1" M.Tech. ECE. Employed as Steno-Typist in Public Health Department, Haryana at Panchkula. Avoid Gotras: Beniwal, Garhwal, Lamboria. Cont.: 9467701696*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.09. 92) 27/5'2" B.Sc (Math) M.Sc (Math with computer science). B.Ed, HTET, CTET, RTET qualified. Preparing for NET. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont.: 8901273699*
- *SM4 Jat Girl (DOB18.08. 96) 23/5'2" B.Sc. Hons. (Zoology). Pursuing M.Sc. Hons. (Zoology) from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont.: 8901273699*
- *SM4 Jat Girl (DOB 22.11. 90) 29/5'6" B.E. MBA, (UIET) Punjab University Chandigarh. Working in Premas Biotech Pvt. Ltd. as Business Partner HR at Manesar (Gurugram) with package of Rs. 09-10 Lakh. Father Deputy Labour Commissioner and mother Government teacher at Chandigarh. Younger brother Advocate. Avoid Gotras: Narwal, Kataria, Kundu. Cont.: 8427009819*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.08.91) 28/5'2" B.A. with Math., M.Sc. Math & Psychology (Gold Medalist), B.Ed., Diploma in guidance counseling. Avoid Gotras: Rathee, Jhajhariya, Rohz, Direct Ahlawat, Panwar. Cont.: 9992075101, 9417424260*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.09.92) 27/5'5" B.D.S. Working in Private Clinic at Bhiwani. Father Assistant XEN, BBMB, Bhiwani, Elder Sister, M.Sc., MCA, MCO, M.Ed (Married). Younger Brother B.Tech. Preparing for SSC. Avoid Gotras: Sheoran, Sindhu, Chahal. Cont.: 9466135035*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.02. 92) 27/5'4" M.Sc Physics from P.U. Chandigarh, B.Ed, CTET cleared. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Singhmar, Sindhu.Cont.: 9463330394*
- *SM4 Jat Girl (DOB 05.04.93) 26/5'7" Working as Computer Operator in Shakti Bhawan Panchkula. Avoid Gotras: Dagar, Kundu, Rawat. Cont.: 9417174597*
- *SM4 Jat Girl (DOB 15.11.88) 31/5'4" B. Tech, M.Tech (ECE), (RIEMT) from Punjabi University Patiala. Working as SWO in PNB Mandi Gobindgarh (Pb.) Father working as JE (DWS) Indian Railways Patiala. Wanted educated match working in Government Sector, Banking or MNC reputed Co. with 5'7" and above. Avoid Gotras: Phogat, Chahal, Sangwan. Cont.: 9779582529*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 27/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM. Pursuing Ph.D from M.D.U. Rohtak. Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowry seeker. Preferred match from Chandigarh, Panchkula, Mohali. Own flat at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl 26/5'8" MA English, Stenography in both English and Hindi. Working as Junior Scale Stenographer in Irrigation Department Haryana at Headquarters Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Sangwan, Dahiya. Cont.: 9217884178*
- *SM4 Jat Girl (DOB 02.08.94) 25/5'3" B. Ed. CTET, HTET. Employed as private teacher. Father, Mother Government servants. Brother Deputy Commandant Pilot. Preferred professionally qualified match. Avoid Gotras: Siwach, Katira, Kalkanda. Cont.: 9988643695, 9416310911, 6283129270*
- *SM4 Jat Girl 27/5'4" Graduation from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal Sharma University Rohtak. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1989) 30/5'2" B. Tech (Bio-Medical) from*

अमृत और मृत्यु दोनों ही इस शरीर में स्थित हैं। मनुष्य मोह से मृत्यु को और सत्य से अमृत को प्राप्त होता है। –वेद व्यास

PTU. M.Tech (Instrumentation) from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhall. Cont.: 9467671451

- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 12.05.88) 30.10/5'2" BSc. (MLT), MSc (Microbiology) from Punjab Technical University Jallandhar. Working as Lab Incharge in reputed Paras Hospital Sector 22, Panchkula. Father in Government job at Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya. Cont.: 8146082832*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.11.89) 29/5'3" Employed as staff nurse in Government hospital. Father Govt. job. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 9463881657*
- *SM4 Jat Girl (DOB 22.04.95) 24/5'2" B.D.S. Doing job in Private hospital. High profile contact only. Preferred doctor or Govt. job. Father DSP, Gurugram. Mother P. Phil. MA. (Housewife.) Avoid Gotras; Jaglan, Kadyan, Malik, Sangwan, Pannu. Cont.: 9416116492, 7988124110*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.02.94) 25/5'2" MBBS from BPS Government Medical College Sonepat. Working as Junior Resident in Government Hospital Delhi. Father (late) Anesthesiologist. Mother Computer Programmer. Sister MBBS from Rohtak. Avoid Gotras; Lalli, Panwar. Cont.: 9050000793.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 16.11.91) 5'1" B.A Economics honours in PU Chandigarh, PG (Diploma) from Pearl Academy New Delhi has worked with S.D. Sharma Associates for 2 years. New doing own practice as Interior Designer. Father working as Sub-Divisional Eng. in HUDA. Avoid Gotras; Beniwal, Khatri, Sehrawat. Cont.: 9876944845, 9899294943*
- *SM4 Jat Boy (DOB 22.04.87) 32/5'7" B.Tech. in Electrical & Communications. Employed in MNC. Delhi. Avoid Gotras: Sangroha, Nain, Kaliraman. Cont.: 9466569366, 7015021974*
- *SM4 Jat Boy (DOB 18.10.90)29/6'1" Employed as Inspector in CBI. Preferred highly qualified girl with at least 5'4" height. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal, Mor. Cont.: 9023492179*
- *SM4 Jat Boy (DOB 13. 02.91)28/5'11" B.Tech. Employed as Branch Sales Manager in Kotak Mahendra Bank, Chandigarh. Family settled in Panchkula. Own flat. Brother Major in Army. Avoid Gotras: Bamel, Nehra, Boora. Cont.: 9069797000*
- *SM4 Jat Boy (DOB 17.10.89)30/6' B.Tech. (CSC). Employed as Inspector in Central GST & Excise Commissioner ate at Surat (Gujrat). with Rs. 70,000/- PM. Preferred match of Haryana or Central Govt. employee with more than 5'6" height of 25-27 years. Father retired as Office Superintendent. Avoid Gotras: Malik, Jattan, Punia. Cont.: 9996858234, 9416140777*
- *SM4 Jat Boy 32/5'11" MCA Computer Science. NRI at Canada, PR. Job in Canada. Salary Rs. 24 lakh PA. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Dangi. Cont.: 9813776961*
- *SM4 Jat Boy (DOB13.12.90) 29/5'10" B.Tech (CSE) Own business (Printing, Builder). Avoid Gotras: Punia, Saral, Gangus. Cont.: 9888899134, 9888685061*
- *SM4 Jat Boy (DOB 31.10.87) 32/6'2" B.A. Employed as Senior Auditor in A.G. Department, Punjab. Salary Rs. 6 lakh PA. Father retired Block in-charge from Agriculture University. Avoid Gotras: Punia, Khokhar. Cont.: 8630643790*
- *SM4 Jat Boy (DOB 11.06.91) 28/6 feet BA, LLB (Hons.), LLM from (UILS) Punjab University Chandigarh. Doing practice in Punjab & Haryana High Court. Father Senior Advocate in Punjab & Haryana High Court. Mother Associate Professor in Govt. College, Haryana. Brother permanent settled in UAE (Dubai) with family. Own house at Panchkula. 5 acre agriculture land in village. Wanted well qualified beautiful girl preferred in job or NET qualified in any subject with minimum 5'5" height. No dowry required. Avoid Gotras: Malik, Siwach, Panghal. Cont.: 9417196626, 9463426994*
- *SM4 Jat Boy 27/5'11" MA, Working in Sarv Shiksha Abhiyan on contract basis in Chandigarh. Selected in Delhi MCD as Primary Teacher on regular basis. Avoid Gotras: Bhakar, Punia, Kanswa. Cont.: 6239019166, 9780260305*
- *SM4 Jat Boy (DOB 03.10.92) 27/5'11" Employed in Army as Major. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Pannu, Sindharh, Loura. Cont.: 9888142240*
- *SM4 Jat Boy (DOB 12.08.91) 28/5'8" Working in coast guard Deputy Commandant (Pilot). Father, Mother Government servants. Well settled family. Avoid Gotras: Siwach, Katira, Kalkanda. Cont.: 9988643695, 9416310911*
- *SM4 Jat Boy (DOB 25.04.93) 26/6'1" B.Tech. Employed as Mechanical Junior Engineer in Steel Strips Wheel Ltd. Land 5 acre. House in Try-city. Avoid Gotras: Nehra, Kadyan, Dhull, Ahlawat, Malik, Dalal, Saroha. Cont.: 9876602035, 9877996707*
- *SM4 Jat Boy (DOB 05.12.91) 27/ 5'8" BA English (Hons.) from Delhi University, LLB from Delhi University. Pursuing practice in Punjab & Haryana High Court. Father Additional Director Agriculture, Haryana. Mother Associate Professor English in Govt. College, Saha, Ambala. 15 acre land. 3 Flats in Gurugram, Panchkula and Sonipat. Avoid Gotras: Gehlawat, Hooda, Banger. Contact: 9466111156*
- *SM4 Jat Boy (DOB 1990) 29/5'6" B.Tech. Working as J. E. in Metro Railway Delhi. Required Govt. job girl. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhall. Cont.: 9467671451*
- *SM4 (Dr.) Jat Boy (DOB 02.09.85) 33/5'8" BDS Banglore. Father Retired Principal, Mother MA, B.Ed. Two sisters BDS/MBBS. Brother one BDS. Six acre agriculture land. Own Plots, flats and clinic. Required BDS, BAMS, BHMS, Nurse. Avoid Gotras: Deswal, Dahiya, Mor. Cont.: 9868092590*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.03.90) 29/5'11" B.Sc in H.M. Employed in railways. Settled in Canada. Avoid Gotras: Punia, Sangwan, Sheoran. Cont.: 9888466688*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.09.86) 32/5'11" Employed as Major in Army. Avoid Gotras: Malik, Ahlawat, Sangwan, Dhaka. Cont.: 9050422041*
- *SM4 Jat Boy (DOB 04.10.88) 31/5'10" Permanent resident of Canada. (Former two time first class Officer in India). Father retired first class officer from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia, Hooda. Cont.:9876155702*
- *SM4 Jat Boy (DOB March, 91) 28/5'11" B.Tech. MBA from Punjab University Chandigarh. Working as Assistant Manager in Milak Fed, Government of Punjab. Class-II officer retired from Haryana Government. Own house triple storey at Panchkula. Preferred MSc or employed girl. Avoid Gotras: Pattar, Chahal, Bohar. Cont.:9466943371, 9417860031*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.07.91) 28/5'11" M.Tech. (Civil) Employed in MNC at Jalor, Rajsthan with package Rs. 8.5 lakh PA. Avoid Gotras: Jaglan, Rathi, Gahlayan. Cont.:9815094054*
- *SM4 Jat Girl (DOB 03.10.92) 27/5'5" M.Sc. (Physics), B.Ed. CTET, HTET cleared. Employed as TGT- Science in private school at Panchkula. Father in Haryana Government. Younger brother MBBS Doctor. Mother housewife. Gotras: Gahlayan, Khatkar, Chhikara, Boora. Cont.:9467630182, 7009312721*

हम जैसा बोते है, वैसा काटते हैं। हम अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं। –स्वामी विवेकानंद

Some Bad Habits which can Damage the Brain

- D S Hooda

The human brain is considered to be the most delicate part of the body with the highest functional attributes. A small damage to the central nervous system can have a dangerous impact on the overall well-being of a person. Your overall health is the sum of your habits.

When you allow your daily routine to be dominated by bad habits; your path towards healthy living will surely be impeded. It is commonly believed that a chain of bad habits is too light to be felt, until it is too heavy to be broken!

As per the recent release of World Health Organization, the most dangerous habits that can damage your brain are as follows:

1. Skipping breakfast

Breakfast is an important part of your nutrition system. After a long break for the whole night, your body needs an immediate supply of glucose to be supplied for different systems to work continuously. When you skip breakfast, your body's blood sugar level can be disturbed, leading towards an insufficient supply of nutrients to the central nervous system, eventually causing nerve damage.

2. Overeating

Consumption of a fatty diet more than a specified limit may cause hardening of brain arteries, which may, in turn, block the circulation of oxygenated blood towards the brain. Due to lack of properly oxygenated blood, the functional power of the brain is found to be decreased, with increased susceptibility to the neurodegenerative disorders.

3. Smoking

Smoking has been identified to be the worst of all habits with multiple damaging effects on various important organs of the body, including brain. Studies have suggested that smoking can cause your brain to shrink, and also maybe lead to serious health conditions such as Alzheimer's disease.

4. Air pollution

The human brain needs a constant oxygenated blood supply for its normal functioning. However, inhalation of highly polluted air can deprive brain of oxygenated blood supply; thus, decreasing overall brain efficiency to a significant level, accounting for its early degeneration.

5. Lack of sleep

Sleep is important for resting your body, allowing its instant rejuvenation. It repairs cellular damage, restores energy levels and reduces stress.

If the body fails to get adequate sleep and rest for a longer period of time, it can damage healthy brain cells, making it less functional.

6. Too much sugar intake

Sugar is found to be the leading culprit of every possible ailment we face in our lives. Sadly, it is present in everything we love to eat or drink. Studies have suggested that increased blood sugar level minimises the absorption of nutrients at the cellular levels. As a matter of fact, brain cells may die and/or degenerate slowly and gradually due to lack of proper nutrition.

7. Lack of stimulation

Stimulating your brain cells for healthy and fruitful work may be helpful in keeping them functional for a longer period of time. Research has indicated that stimulation of brain cells activates new pathways and better communication of brain cells network, allowing them to be more productive. The more you talk, think and stimulate your brain cells; the more efficiently it will work.

जाटों के गौरव – वीरांगना शैलजा एवं मालव वीर

– डा. गिरधारीलाल पाण्डव (आगरा)

वीर शैलजा की बुद्धि ने, कृष्ण कला अपनायी।
उस फिलिप्स के प्राण हरण की उसने कसमें खायी।।
काम वासना के वश हो, जब हाथ जिस्म पर मारा।
सेनापति की गर्दन पर खेंचि दुधारा मारा।।
बही रक्त की धार, सदाँ को ऐसा सोया।
सेनावति की देख दुर्दशा, बहुत सिकन्दर रोया।।
भारत के लोगों से अब बदला लेने की ठानी।
वीर–प्रसूता भूमि भारती मत करना नादानी।।
ऐसा कौशल देख सिकन्दर, सीना ठनक गया था।
जाट की इस बेटी का, लोहा मान गया था।
दुष्ट सिकन्दर की छाती पर, मालव तीर लगा था।
कठ गोती वीरों का सच में, गुस्सा नहीं थमा था।।
घबरा गया सिकन्दर तन मन, मालव तीर चला था,
ऐसा तीर विधा छाती में कारण मौत बना था।
सभी देश के लोगो ईश से, माँग रहे था दुआ।
आतावायी लोगों का प्रभु, अन्त सदाँ ही हुआ।।
अति निर्दयो नन्द बंशी नृप ऐसा अन्यत्र नहीं था।
घोर यातना देने वाला, क्या ये काम सही था।।
कोई राजा नन्द बंश का, लोहा नहीं ले पाया।
देश–विदेशों में भी उसका, आंतेशय वैभव छाया।।
नृत्य शैलजा देख अनूठा बना मृत्यु बाजा।
सुरा–सुन्दरी के चक्कर में फँसा जाल में राजा।।
रम का घट सोने का भारी नृप के सिर पर मारा।
प्राण पखेरू उड़े नन्द के,गया काम से मारा।।
किला घेर लिया मौर्यो ने, अब नहीं कोई सहारा।
भय से भाग गये सब सैनिक, ऐसा अज़ब नजारा।।
कूटनीति कौटिल्य अनौखी, बुझा नन्द का दीया।
सम्पूर्ण–पूर्ण प्रण हुआ विप्रका, मोठा जल जब पिया।।

कोई भी क्रिया अकारण नहीं होती। कारण से ही क्रिया की उत्पति होती है। –चाणक्य

मुख्यमंत्री मनोहरलाल खटटर को प्रशंशा पत्र व पगड़ी भेँट करते पूर्व डीजीपी डॉ महेन्द्र सिंह मलिक

सीबीएसएम खेल स्कुल निडानी में दिए सम्मान से गदगद हुए मुख्यमंत्रीः डॉ० एम. एस. मालिक
मुख्यमंत्री ने खेलों की दिशा में काम करने वाली संस्था को सुविधा देने का दिया आस्वाशन !
खेलों के आयोजन में मुख्यमंत्री की जगह राज्य सभा सांसद डीपी वत्स हुए थे शामिल !

जुलाना, 29 नवम्बर : चौधरी भरतसिंह मैमोरियल खेल स्कुल निडानी में पिछले दिनों दो दिवसीय खेल मेले के सम्मापन अवशर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खटटर को मुख्यातिथि के रूप में पहुंचना था जो किसी सरकारी मीटिंग होने के कारण संस्था में नहीं पहुंच पाए और मुख्यमंत्री जी की जगह राज्य सभा सांसद जर्नल डीपी वत्स पहुंचे थे और उन्होंने कहा था की खेल स्कुल निडानी की सभी उपलब्धियों से मुख्यमंत्री को अवगत करवाने का काम करूंगा। सरकार द्वारा खिलाड़ियों को सुविधा देने के लिए सांसद जर्नल डीपी वत्स और प्रदेश के पूर्व डीजीपी डॉ महेन्द्र सिंह मलिक को खेल स्कुल निडानी के आयोजन में शॉल और पगड़ी खेल स्कुल व पूर्व सरपंच दलीप सिंह मलिक के नेतृत्व में खेल बचाओ युवा जगाओ संस्था द्वारा एक प्रशंसा पत्र स्मृति चिन्ह भेँट किया गया था। खेल स्कुल में दिए गए सम्मान को लेकर सीबीएसएम संस्था की और से जाट सभा चंडीगढ़ के अध्यक्ष पूर्व डीजीपी डॉ महेन्द्र सिंह मलिक के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने मुख्यमंत्री निवास पर पहुंच कर मनोहरलाल खटटर को पगड़ी, शॉल, स्मृति चिन्ह और प्रशंसा पत्र भेँट किया जिससे मुख्यमंत्री मनोहरलाल खटटर खुशी से गदगद नजर आये। डॉ महेन्द्र सिंह मलिक ने बताया प्रतिनिधि मण्डल से कहा की खेल स्कुल निडानी द्वारा खेलों की दिशा में जो प्रयास कीये जा रहे हैं वो सहरानीय हैं इसके लिए प्रदेश सरकार की और से जो भी मदद की जरूरत होगी उसे सरकार द्वारा पूरी करना हमारी प्रार्थमिकता होगी। उन्होंने कहा की संस्था से जो खिलाडी नेशनल और इंटरनेशनल खेलों में मैडल लाने का काम करेंगे उनको सरकार द्वारा सम्मानित किया जायेगा इस लिए खिलाडी और अधिक खेलों में अपना ध्यान आकर्षित करे। डॉ महेन्द्र सिंह मलिक के साथ प्रतिनिधि मण्डल में जाट सभा के उपाध्यक्ष जयपाल पुनिया, सभा के सचिव बीएस गिल, मनबीर सांगवान, सदस्य लक्ष्मण सिंह फोगाट, कोषाध्यक्ष राजेंद्र सिंह खर्ब, रणधीर सिंह श्योराण, प्रैस प्रवक्ता आनन्द लाठर सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

विद्वान क्षमा से ही शुद्ध होते है। –मनु

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। यात्री निवास की साईट की निशानदेही लेकर चार दीवारी बनाने का कार्य चल रहा है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्रि निवास भवन का निर्माण अक्तूबर 2019 में शुरू किया जा रहा है।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह-सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172-2654932, 2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर-6, पंचकूला
फोन : 0172-2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।